بسم الله الرحمن الرحيم

لا إله إلا الله محمد رسول الله

अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपासना के योग्य नहीं मुहम्मद[स०] अल्लाह के रसूल हैं।

Vol - 24
Issue - 03

राह-ए-ईमान

मार्च
2022 ई०

ज्ञान और कर्म का इस्लामी दर्पण

सम्पादक
फ़रहत अहमद आचार्य

उप सम्पादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद M.A.
इब्नुल मेहदी लईक M.A.

संपादक - मंडल
फज़ल नासिर

सेटिंग
फ़रहत अहमद आचार्य

टाइटल डिज़ाइन
इब्नुल मेहदी लईक M.A.

मैनेजर
अतहर अहमद शमीम M.A.

कार्यालय प्रभार
सय्यद हारिस अहमद

विषय सूचि

1. पवित्र क़ुरआन 2
2. पवित्र हदीस 2
3. हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी 3
4. रूहानी ख़ज़ायन (तजल्लियात-ए-इलाहिया अर्थात ख़ुदा की चमकारें) 4
5. सम्पादकीय 6
6. सारांश ख़ुत्बः जुम्अः (दिनांक 18-2-2022) 8
7. क़ुरआन-ए-मजीद की 26 आयतों पर आरोपों के उत्तर 12
8. पर्दा (हिजाब) 17
9. अपने सत्यापन हेतु ख़ुदाई निशानों का उल्लेख 21
10. सामान्य ज्ञान 28

☆ ☆ ☆

पत्र व्यवहार के लिए पता :-
सम्पादक राह-ए-ईमान, मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत,
क़ादियान - 143516 ज़िला गुरदासपुर, पंजाब।
Editor Rah-e-Iman, Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat,
Qadian - 143516, Distt. Gurdaspur (Pb.)
Fax No. 01872 - 220139, **Email : rahe.imaan@gmail.com**
Editor- 9115040806, Manager- 9815639670

लेखकों के विचार से अहमदिया मुस्लिम जमाअत का सहमत होना ज़रूरी नहीं

वार्षिक मूल्य: 130 रुपए

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat, P.O. Qadian, Distt. Gurdaspour 143516 Punjab iNDIA. Editor Farhat Ahmad

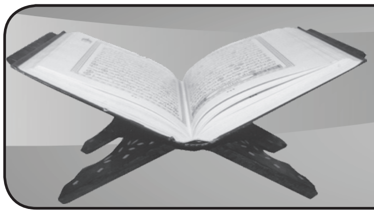

पवित्र क़ुरआन

(अल्लाह तआला के कथन)

अनुवाद: अल्लाह ही की प्रशंसा करता है जो आसमानों में है और जो ज़मीन में है। वह बादशाह है, कुद्दूस है, कामिल ग़लबा वाला और साहब-ए-हिक्मत है। वही है जिस ने उम्मी लोगों में एक महान रसूल अवतरित किया। वह उन पर उसकी आयात की तिलावत करता है और उन्हें किताब की और हिक्मत की शिक्षा देता है जबकि इससे पहले वे निसंदेह खुली खुली गुमराही में थे। और उन्ही में से दूसरों की तरफ़ भी (उसे अवतरित किया है) जो अभी उन से नहीं मिले। वह पूर्ण ग़लबा वाला (और) साहब-ए-हिक्मत है। यह अल्लाह का फ़ज़ल है वह इस को जिसे चाहता है अता करता है। और अल्लाह बहुत बड़े फ़ज़ल वाला है।

(सूरः जुम्मा: 2 से 5)

पवित्र हदीस

(हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कथन)

ख़िलाफ़त अला मिहाजे नबुव्वत के क़ियाम की ख़ुशख़बरी

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि आँहज़रत अलैहिस्सलाम अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम में नबुव्वत क़ायम रहेगी जब तक अल्लाह चाहेगा फिर वह उसको उठा लेगा और ख़िलाफ़त अला मिनहाज नबुव्वत स्थापित होगी। फिर अल्लाह तआला जब चाहेगा इस नेअमत को भी उठा लेगा। फिर उसकी तक़दीर के अनुसार कष्ट देने वाली बादशाहत क़ायम होगी। (जिस से लोग दुखी होंगे और तंगी महसूस करेंगे) जब यह दौर ख़त्म होगा तो उसकी दूसरी तक़दीर के अनुसार इस से भी बढ़कर कष्ट देने वाली बादशाहत स्थापित होगी यहां तक कि अल्लाह तआला का रहम जोश में आएगा और अंधकार और अत्याचार का समय ख़त्म कर देगा। उसके बाद फिर ख़िलाफ़त अला मिनहाजे नबुव्वत स्थापित होगी। यह फ़रमा कर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ख़ामोश हो गए। (मिश्कात)

अनुवाद:- तुम में से जो जीवित रहेगा वह (इंशाल्लाह तआला) ईसा इब्ने मरियम का ज़माना पाएगा वही इमाम महदी और हकम और अदल होगा जो सलीब को तोड़ेगा और सूअर को क़तल करेगा। (मुसनद)

☆ ☆ ☆

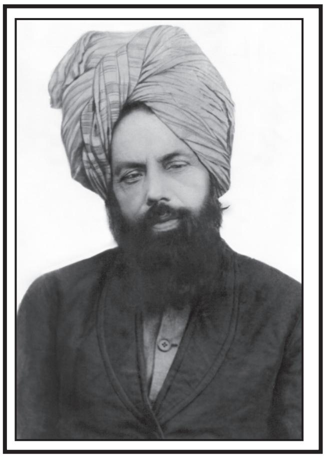

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :-

नवाफ़िल की हक़ीक़त

नादान इन्सान कभी-कभी दुआ के क़ुबूल न होने से मुर्तद हो जाता है। सहीह बुख़ारी में हदीस है कि नवाफ़िल से मोमिन मेरा निकटस्थ हो जाता है। एक फराइज़ होते हैं और दूसरे नवाफ़िल। अर्थात् एक तो वे आदेश हैं जो अनिवार्य अधिकारों के रूप में हैं। और नवाफ़िल वह हैं जो फराइज़ के अतिरिक्त हैं। और वह इसलिए हैं कि अगर फराइज़ में कोई कमी रह गई हो तो नवाफ़िल से पूरी हो जावे। लोगों ने नवाफ़िल केवल नमाज़ ही के नवाफ़िल समझे हुए हैं। नहीं यह बात नहीं है। हर काम के साथ नवाफ़िल होते हैं। इंसान ज़कात देता है तो कभी ज़कात के अलावा भी दे। रमज़ान में रोज़े रखता है कभी उसके अतिरिक्त भी रखे। क़र्ज़ ले तो कुछ साथ बढ़ाकर ज़्यादा दे। क्योंकि उसने मदद की।

नवाफ़िल फ़राइज़ को पूरा करने वाले होते हैं। नफ्ल के समय दिल में एक गिड़गिड़ाहट और ख़ौफ होता है कि फ़राइज़ में जो कमी हुई है वह अब पूरी हो जाए। यही वह राज़ है जो नवाफ़िल का ख़ुदा की निकटस्थता के साथ गहरा संबंध है। मानो आजिज़ी, इन्किसारी, गिड़गिड़ाहट और सांसारिक मोह माया के त्याग की हालत उसमें पैदा होती है। इसीलिए निकटस्थता प्राप्ति के लिए शुक्ल पक्ष के अंतिम तीन दिन रोज़े और शव्वाल के 6 रोजे यह सब नवाफ़िल हैं। इसलिए याद रखो कि ख़ुदा से अपार प्रेम नफ़्ल ही के द्वारा होता है। इसका परिणाम यह होता है कि ख़ुदा फ़रमाता है कि फिर मैं ऐसे निकटस्थ और मोमिन बंदों की नज़र हो नज़र बन जाता हूँ। अर्थात् जहां मेरी इच्छा होती है वहीं उनकी नज़र पड़ती है। सच्चा मौत का भरोसा नहीं रखता और ख़ुदा से ग़ाफ़िल नहीं होता।

वह उनके कान हो जाता है। यह इस बात की ओर संकेत है कि जहां अल्लाह की या उसके रसूल की या उसकी किताब का अनादर और अपमान होता है वहां से दु:खी और नाराज़ होकर चले जाते हैं। वे सुन नहीं सकते और कोई ऐसी बात जो अल्लाह तआला की मर्ज़ी और उसके आदेश के ख़िलाफ़ हो नहीं सुनते और ऐसी मजलिसों में नहीं बैठते। इसी तरह दुराचार की बातें और नाच-गानों के गंदे नज़ारों और आवाज़ों से बचते हैं। नामहरम की आवाज़ सुनकर बुरे विचारों का पैदा होना आंखों का व्यभिचार है। इसीलिए इस्लाम ने पर्दा की रस्म रखी है।

मसीह का यह कहना कि व्यभिचार की नज़र से न देख, कोई सर्वोत्कृष्ट शिक्षा नहीं है। इसकी तुलना में सर्वोत्कृष्ट शिक्षा यह है जो प्रारंभत: पाप से बचाती है। قل للمومنين...... अर्थात् किसी दृष्टि से भी न देखो क्योंकि दिल अपने वश में नहीं है। यह कैसी पूर्ण और सर्वोत्कृष्ट शिक्षा है।" (मलफ़ूज़ात जिल्द - 2)

☆ ☆ ☆

रूहानी ख़ज़ायन

तजल्लियात-ए-इलाहिया (ख़ुदाई चमकारें)

(हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम द्वारा लिखित)

आप लोग समझ सकते हैं कि भूगर्भ-शास्त्र का कोई ज्ञान इस व्याख्या और विवरण को बता नहीं सकता अपितु वह ख़ुदा जो पृथ्वी और आकाश का ख़ुदा है वह अपने विशेष रसूलों को ये रहस्य बताता है न कि प्रत्येक को, ताकि संसार के लोग कुफ्र और इन्कार से बच जाएं और ताकि वे ईमान लाएं और नर्क के अज़ाब से मुक्ति पाएं। तो देखो मैं पृथ्वी और आकाश को गवाह ठहराता हूं कि आज मैंने वह भविष्यवाणी जो पांच भूकम्पों के बारे में है स्पष्टतापूर्वक वर्णन कर दी है ताकि तुम पर प्रमाण हो और ताकि तुम्हारी मृत्यु गुमराही की हालत में न हो। हे प्रियजनो! ख़ुदा से मत लड़ो कि इस लड़ाई में तुम कदापि विजयी नहीं हो सकते। ख़ुदा किसी क़ौम पर ऐसे अज़ाब नहीं उतारता और न कभी उसने किए जब तक उस क़ौम में उसकी ओर से कोई रसूल न आया हो अर्थात् जब तक उसका भेजा हुआ उनमें प्रकट न हुआ हो। इसलिए तुम ख़ुदा के अनादि कानून से लाभ उठाओ और तलाश करो कि वह कौन है जिसके लिए तुम्हारी आंखों के सामने आकाश पर रमज़ान के महीने में चन्द्र और सूर्य ग्रहण हुआ और पृथ्वी पर प्लेग फैली तथा भूकम्प आए? और समय से पूर्व भविष्यवाणियां किस ने सुनाईं और किसने यह दावा किया कि मैं मसीह मौऊद हूं? उस व्यक्ति को तलाश करो कि वह तुम में मौजूद है और वह यही है जो बोल रहा है-

وَلَا تَايْــَٔــسُوْا مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ اِنَّهٗ لَا يَايْــَٔــسُ مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْكٰفِرُوْنَ ۝ (यूसुफ़-88)

मैंने यहां तक निबंध को समाप्त किया था कि आज फिर 15 मार्च 1906 ई. को दिन वीरवार सुबह के समय यह इल्हाम हुआ -**<u>ख़ुदा निकलने को है</u>** انت منی بمنزلة بروزی۔ وعداللہ انّ وعد اللہ لا یبدّل अर्थात् ख़ुदा इन पांच भूकम्पों को लाने से अपना चेहरा प्रकट करेगा और अपने अस्तित्व को दिखा देगा और तू मुझ से ऐसा है जैसा कि मैं ही प्रकट हो गया अर्थात् तेरा प्रकटन बिल्कुल मेरा ही प्रकटन होगा। यह ख़ुदा का वादा है कि पांच भूकम्पों के साथ ख़ुदा स्वयं को प्रकट करेगा और ख़ुदा स्वयं को प्रकट करेगा और ख़ुदा का वादा नहीं टलेगा तथा अवश्य हो कर रहेगा।

स्मरण रहे कि भविष्यवाणी दो प्रकार की होती है। एक केवल अजाब के वादे की जिस से दण्ड देना होता है और ऐसी भविष्यवाणी यदि ख़ुदा तआला की ओर से हो तो किसी के डरने, तौबः, क्षमा याचना या दान और दुआ से टल सकती है जैसा कि यूनुस नबी की भविष्यवाणी टल गई और प्रकटन में नहीं आई। क्योंकि यूनुस नबी को अज़ाब के वादे के तौर पर बताया गया था कि तेरी क़ौम पर चालीस दिन तक अज़ाब आ जाएगा और यह भविष्यवाणी अटल तौर पर बिना किसी शर्त के थी परन्तु तब भी जब यूनुस की क़ौम ने तौबः और इस्तिग़फ़ार किया और उनके दिल डर गए तो ख़ुदा तआला ने उस अज़ाब का लाना रोक दिया और वह अटल भविष्यवाणी टल गई जिसके कारण यूनुस नबी को बड़े संकट का सामना हुआ और उस ने चाहा कि झूठा कहला कर फिर अपनी कौम को मुंह दिखाए। इस प्रकार अज़ाब के वादे की भविष्यवाणी

का तौब: इस्तिग़फ़ार या दान से टल जाना एक ऐसा नितान्त स्पष्ट मामला है कि किसी क़ौम या समुदाय को इस से इन्कार नहीं। क्योंकि समस्त नबियों की सहमति से यह बात मान्य है कि तौब:, क्षमा-याचना और दान-पुण्य से बला रद्द हो सकती है अब स्पष्ट है कि जिस बला (विपदा) को ख़ुदा ने किसी पर डालना चाहा है यदि नबी को समय से पूर्व उस विपदा का ज्ञान दिया जाए तो केवल ख़ुदा तआला का गुप्त इरादा होगा और यहां इन मूर्ख मौलवियों का कितना छिद्रान्वेषण होता है कि मुझ पर ऐतराज़ करके कहते हैं कि डिप्टी अब्दुल्लाह आथम पन्द्रह महीने की मीआद में नहीं मरा अपितु कुछ माह बाद मरा। नहीं जानते कि वह अज़ाब के वादे की भविष्यवाणी थी और इसके बावजूद यूनुस की भविष्यवाणी की तरह केवल अटल न थी अपितु उसके साथ ये शब्द थे कि बशर्ते कि सच्चाई की ओर रुजू न करे। अर्थात् इस हालत में पन्द्रह महीने के अन्दर मरेगा कि जब उसके दिल ने सच्चाई की ओर रुजू न किया हो। परन्तु यह बात ईसाइयों की गवाही से भी प्रमाणित है कि उसने उसी मज्लिस में जब यह भविष्यवाणी सुनाई गई थी सच्चाई की ओर रुजू कर लिया था और डर गया था। क्योंकि जब मैंने मुबाहस: का सिलसिला समाप्त होने के बाद साठ या सत्तर गवाहों के सामने जिसमें से कुछ मुसलमान और कुछ ईसाई थे, डाक्टर मार्टिन क्लार्क की कोठी पर बुलन्द आवाज़ से कहा कि आप ने अपनी अमुक पुस्तक में हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नाम दज्जाल रखा है इसलिए ख़ुदा ने इरादा किया है कि वह पन्द्रह महीने के अन्दर आप को मार देगा बशर्ते कि सच्चाई की ओर रुजू न करो। तब वह इस भविष्यवाणी को सुनते ही डर गया और उसका रंग ज़र्द हो गया और उसने अपनी जीभ बाहर निकाली और दोनों हाथ अपने कानों पर रखे तथा उसका शरीर भय से कांप उठा औऱ तौब: करने वाले का रूप बना कर कहा कि मैंने आंहज़रत को कदापि दज्जाल नहीं कहा। मेरे विचार से उस समय जल्से में तीस से अधिक ईसाई मौजूद होंगे जिन में से एक डाक्टर मार्टिन क्लार्क भी थे जो अब तक जीवित मौजूद हैं। यदि उन से क़सम लेकर पूछा जाए तो मैं आशा नहीं रखता कि वह घटना के विरुद्ध वर्णन कर सकें या उस घटना को छुपा सकें। फिर इसके बावजूद यह बात भी प्रमाणित है कि इस भविष्यवाणी के सुनते ही डिप्टी अब्दुल्लाह आथम के हृदय पर बहुत बेचैनी और व्याकुलता छा गयी और वह भविष्यवाणी के प्रभाव से पागलों की तरह हो गया और बहुत रोता था और इसके बाद इस्लाम धर्म के खण्डन में उस ने एक पंक्ति भी प्रकाशित न की, यहां तक कि केवल कुछ माह बाद मृत्यु पा गया। और मैंने निरन्तर विज्ञापनों से उस पर हुज्जत पूरी की तथा विज्ञापनों में लिखा कि यदि उस ने भविष्यवाणी की शर्त के अनुसार अपने हृदय में सच्चाई की ओर रुजू नहीं किया तो वह क़सम खा कर कहे तो मैं वादा करता हूं कि मैं चार हज़ार रुपया उस क़सम के बाद अविलम्ब उसको दूंगा। परन्तु ईसाइयों के आग्रह के बावजूद (कि क़सम खाले) उसने क़सम न खाई और इस प्रकार टाल दिया कि हमारे धर्म में क़सम खाना मना है। हालांकि इंजील से सिद्ध है कि पतरस ने क़मस खाई, पोलूस ने क़सम खाई और स्वयं हज़रत मसीह ने क़सम खाई फिर मना क्योंकर हो गई और अब तक अदालतों में ईसाई गवाहों को क़सम दी जाती है अपितु दूसरों के लिए इक़रार-ए-सालिह और ईसाइयों के लिए विशेष तौर पर क़सम है। अत: इस हीले-बहाने के बावजूद फिर मौत से बच न सके। और जैसा कि मैंने विज्ञापनों में प्रकाशित किया था मेरे अन्तिम विज्ञापन से कुछ महीने बाद मर गया और मौत का रोग तो उन्हीं दिनों में आरंभ हो गया था।**.....शेष**

(तजल्लियात-ए-इलाहिया (ख़ुदाई चमकारें) पृष्ठ 12-16)

सम्पादकीय 23 मार्च, मसीह मौऊद दिवस

जमाअत अहमदिया के इतिहास में 23 मार्च का दिन बेहद अहम है। 23 मार्च, 1889 वह दिन था जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हज़रत सूफी अहमद जान के घर लुधियाना में पहली बार बैअत ली और इस तरह अहमदिया जमाअत की स्थापना हुई जिसके द्वारा अल्लाह ने इस्लाम के पुनरुद्धार को मुक़द्दर कर रखा था। इससे पहले जब किसी निष्ठावान ने आपसे बैअत (निष्ठा की शपथ) लेने का निवेदन किया तो आपने यही उत्तर दिया कि अभी मुझे ख़ुदा की ओर से इसका आदेश नहीं दिया गया है। इसलिए अभी बैअत लेना उचित नहीं है। हो सकता है इस विषय में अल्लाह तआला कोई मार्गदर्शन करे।

इसके बाद 1 दिसंबर, 1888 को हुज़ूर ने "तबलीग" के नाम से बैअत लेने के बारे में पहली बार एक विज्ञापन दिया, जिसमें आप ने ईश्वर की आज्ञा के अनुसार बैअत लेने का संदेश दिया। फिर 12 जनवरी, 1889 को, हज़रत मुस्लेह मौऊद के जन्म के दिन आप ने एक विज्ञापन प्रकाशित किया जिसमें 1 दिसंबर के विज्ञापन का उल्लेख किया और बैअत की दस शर्तों का वर्णन किया।

हज़रत साहब ने इस विज्ञापन में यह भी सलाह दी थी कि जो बैअत करना चाहें उन्हें सुन्नत के अनुसार इस्तिखारा करने के बाद बैअत के लिए उपस्थित होना चाहिए।

इसके बाद आप क़ादियान से लुधियाना गए और 4 मार्च 1889 को एक विज्ञापन प्रकाशित किया जिसमें बैअत करने के लिए तैयार लोगों को कुछ आवश्यक जानकारी उपलब्ध कराई थी और इस विज्ञापन में बैअत के उद्देश्य के बारे में भी वर्णन किया। और लिखा कि आप 25 मार्च तक लुधियाना में ही रहेंगे जो बैअत करना चाहते हैं वे 20 तारीख के बाद आएं।

हज़रत मियां अब्दुल्ला साहिब सिनौरी के कथन के अनुसार, 23 मार्च, 1889 को, जब हज़रत साहब ने पहली बार बैअत ली, तो आप एक कमरे में बैठ गए और शेख हामिद अली साहब से कहा कि जिसे मैं कहता जाऊँ उसे कमरे के अंदर भेजते जाएं। सबसे पहले हज़रत मौलवी हकीम नूरुद्दीन साहब को बुलाया गया और उनसे बैअत ली। इसी तरह बाकी लोगों को भी एक-एक करके बुलाकर उनकी बैअत ली। उस समय बैअत के शब्द इस प्रकार थे- "आज, अहमद के हाथ पर, मैं अपने सभी पापों और बुरी आदतों से तौबा (पश्चात्ताप) करता हूं, जिनमें मैं ग्रस्त था, और मैं सच्चे दिल और दृढ़ संकल्प के साथ प्रतिज्ञा करता हूं कि जहां तक मेरे पास ताकत और समझ है, मैं सभी पापों से अपने जीवन के अंतिम दिन तक बचत रहूँगा। मैं दुनिया के सुखों और आत्मा के सुखों से पहले धर्म को महत्त्व दूंगा और जहां तक संभव हो मैं 12 जनवरी की दस शर्तों का पालन करूंगा और मैं अभी भी अपने अतीत के पापों के लिए सर्वशक्तिमान ईश्वर से क्षमा चाहता हूं।"

अहमदिया मुस्लिम जमाअत् के संस्थापक हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी जमाअत् में सम्मिलित होने के लिए निम्नलिखित शर्तें रखीं:

प्रथम : बैअत करने वाला (दीक्षित होने वाला) सच्चे दिल से इस बात की प्रतिज्ञा करे कि भविष्य में

उस समय तक कि कब्र में चला जाए शिर्क (अर्थात् अल्लाह तआला के साथ देवी–देवताओं और अन्य सृष्टि की उपासना का सिद्धान्त, अनेकेश्वरवाद) से बचता रहेगा।

द्वितीय : यह कि झूठ और व्यभिचार और बुरी दृष्टि और प्रत्येक दुराचार और अत्याचार और ख़यानत (धरोहर को हानि पहुँचाना) और कलह और विद्रोह की नीतियों से बचता रहेगा और तामसिक आवेगों के समय उनके वशीभूत नहीं होगा चाहे कैसा ही उत्तेजक आवेग हों।

तृतीय : यह कि ख़ुदा और उसके रसूल के आदेशानुसार पांचों समय की नमाज़ बिला नाग़ा अदा करता रहेगा और यथाशक्ति तहज्जुद की नमाज़ पढ़ने और अपने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर दरूद भेजने और प्रत्येक दिन अपने गुनाहों की माफ़ी माँगने और क्षमायाचना करने में निरन्तर लगा रहेगा और हार्दिक प्रेम से ख़ुदा तआला के उपकारों को याद करके उसकी स्मृति और प्रशंसा करना प्रतिदिन का नियम बनाएगा।

चतुर्थ : यह कि सामान्य रूप से सम्पूर्ण मानव-समाज और विशेषकर मुसलमानों को अपने तामसिक आवेगों के समय किसी प्रकार का अनुचित कष्ट नहीं पहुँचाएगा, न वाणी से, न हाथ से, न किसी अन्य प्रकार से ।

पंचम : यह कि प्रत्येक अवस्था सुख-दुःख, सम्पन्नता-विपन्नता और सम्पदा-आपदा में ख़ुदा तआला के साथ वफ़ादारी करेगा और प्रत्येक स्थिति में अल्लाह तआला के निर्णय पर राज़ी होगा और उसके मार्ग में प्रत्येक अपमान और दुःख को स्वीकार करने के लिए तैयार रहेगा और किसी विपत्ति के आने पर मुँह नहीं फेरेगा अपितु आगे कदम बढ़ाएगा।

शेष पृष्ठ 32 पर

पत्रिका राह-ए-ईमान का पंजीकरण

1- समाचार पत्र का नाम : राहे ईमान

2- समाचार पत्र की पंजीयन संख्या:

PUNHI NO/ 1999/4052

3- भाषा: हिन्दी

4- प्रकाशन का नियत काल : मासिक

5- प्रकाशक एवं मुद्रक नाम:

शुएब अहमद

राष्ट्रियता: भारतीय

पता: मुहल्ला अहमदिया

क़ादियान गुरदासपुर, पंजाब

6- संपादक: फरहत अहमद

राष्ट्रियता: भारतीय

पता: मुहल्ला अहमदिया

क़ादियान, गुरदासपुर, पंजाब

7- मुद्रण का स्थान:

फज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रैस

पता: मुहल्ला अहमदिया

क़ादियान, गुरदासपुर पंजाब

प्रकाशन का स्थान:

मज्लिस खुद्दामुल अहमदिया, भारत

क़ादियान 143516, गुरदासपुर, पंजाब

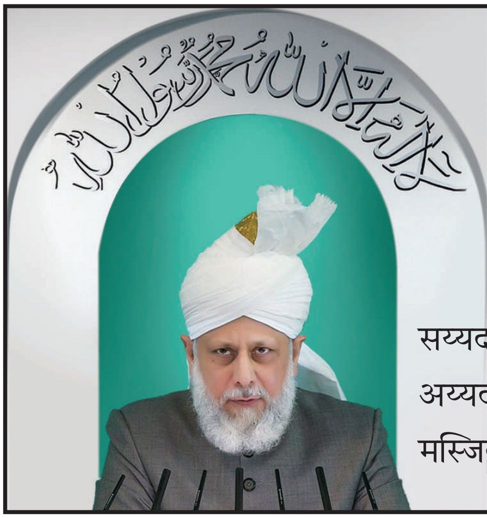

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 18.02.2022 मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, टिलफोर्ड बर्तानिया

पेशगोई मुस्लेह मौऊद के पूरा होने के सम्बंध में विभिन्न आयामों के बारे में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु के अपने कथनों के आलोक में ईमान वर्धक वर्णन।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर ख़लीफ़तुल मसीह खामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस्लाम के दुशमनों की इस आपत्ति पर कि इस्लाम कोई निशान नहीं दिखाता, ख़ुदा तआला से सूचना पा कर इस्लाम की सत्यता के बारे में एक बड़े निशान के रूप में एक निश्चित अवधि में लगभग बावन तरेपन विशेषताओं से सुशोभित अपने एक बेटे के जन्म की भविष्यवाणी के विषय में घोषणा फ़रमाई जो न केवल उस अवधि में पैदा हुआ अपितु उसने लम्बी आयु भी पाई तथा उसे इस्लाम की बहुमूल्य सेवा का अवसर भी मिला। इस भविष्य वाणी को हम हर साल २० फरवरी को पेशगोई मुस्लेह मौऊद रज़ी. के संदर्भ में याद रखते हैं। इसके विभिन्न आयामों पर जमाअती जलसों में प्रकाश डाला जाता है तथा एम टी ए पर भी प्रोग्राम आते हैं।

पेशगोई के अनुसार लम्बी आयु पाने वाले इस बच्चे के स्वास्थ्य की दशा के बारे में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. फ़रमाते हैं कि बचपन में मेरा स्वास्थ्य अत्यंत दुर्बल था, पहले काली खांसी हुई फिर स्वास्थ्य इतना गिर गया कि गयारह बारह साल की आयु तक जीवन मृत्यु के संघर्ष में लिप्त रहा, दृष्टि कमज़ोर हो गई, छः सात महीने तक मुझे बुख़ार आता रहा, टी बी का रोग घोषित कर दिया गया, इन कारणों से नियमानुसार शिक्षा प्राप्त नहीं कर सका, प्रायः स्कूल से गायब रहता, कौन ऐसी अवस्था में लम्बी आयु के बारे में सुनिश्चित कर सकता है, ऐसी स्थिति में कौन कह सकता है कि ये ज्ञान भी उसको मिलेंगे। आप रज़ी. फ़रमाते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलै. ने फ़रमाया कि क़ुर्आन तथा हदीस पढ़ लेगा तो समझो कि पर्याप्त है। कहते हैं कि

अतएव मेरा स्वास्थ्य इतना दुर्बल था कि दुनिया की शिक्षा पाने के विषय में पूर्णत: अयोग्य था, मेरी नज़र भी कमज़ोर थी, मैं प्राईमरी मिडिल तथा इन्ट्रेंस की परीक्षा में फ़ेल हुआ हूँ, किसी परीक्षा में पास नहीं हुआ।

आप रज़ी. फ़रमाते हैं कि ख़ुदा ने मेरे सम्बंध में सूचना दी थी कि मैं प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष ज्ञान से परिपूर्ण किया जाऊँगा। अत: बावजूद इसके कि सांसारिक विद्याओं में से कोई विद्या मैंने नहीं पढ़ी अल्लाह तआला ने ऐसी महान पुस्तकें मेरे क़लम से लिखवाईं कि दुनिया यह मानने के लिए विवश है कि इनसे बढ़कर इस्लाम की शिक्षाओं के सम्बंध में और कुछ नहीं लिखा जा सकता। क़ुर्आन करीम की व्याख्या का एक भाग तफ़सीरे कबीर के नाम से लिखा जिसे पढ़ कर बड़े बड़े विरोधियों ने भी स्वीकार किया कि इस जैसी तफ़सीर आजतक कोई नहीं लिखी गई।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. फ़रमाते हैं कि मैं अभी बच्चा ही था कि सपने में एक फ़रश्ति ने सूर: फ़ातिह: की तफ़सीर सिखानी शुरु की और जब वह اِيَّاكَ نَعۡبُدُ وَاِيَّاكَ نَسۡتَعِيۡنُ ۝ पर पहुंचा तो कहने लगा कि आजतक जितने व्याख्याकार हुए हैं उन सबने केवल इस आयत तक तफ़सीर लिखी है परन्तु मैं तुम्हें इसके आगे भी व्याख्या सिखाता हूँ। अत: उसने पूरी सूर: फ़ातिह: की तफ़सीर मुझे सिखा दी। इस सपने का अभिप्राय: वास्तव में यही था कि क़ुर्आन के बोध की क्षमता मुझमें रख दी गई। आप रज़ी. ने दुनिया को चुनौती दी कि यह क्षमता मेरे भीतर इतनी अधिक है कि मैं दावा करता हूँ कि सूर: फ़ातिह: से ही मैं सम्पूर्ण इस्लाम की शिक्षा बयान कर सकता हूँ।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. बयान करते हैं कि हमारे स्कूल की फ़ुटबाल टीम को अमृतसर में मैच जीतने पर एक सेठ ने दावत दी, जहाँ मुझे तक़रीर करने के लिए खड़ा कर दिया गया। मेरी दुआ पर ख़ुदा तआला ने सूर: फ़ातिह: के विषय में मेरे दिल में एक विचार डाला और मैंने कहा देखो क़ुर्आन करीम में अल्लाह तआला ने यह दुआ सिखाई है कि

غَيۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَيۡهِمۡ وَلَا الضَّآلِّيۡنَ ۝

में غَيۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ का अभिप्राय: है कि हम यहूदी न बन जाएँ, तथा وَلَا الضَّآلِّيۡنَ का अभिप्राय: यह है कि हम नसारा न बन जाएँ। इसकी और अधिक व्याख्या इस लिए भी होती है कि रसूल करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि इस उम्मत में एक मसीह आएगा, जो लोग उसका इंकार करेंगे वे यहूदियों के समान हो जाएँगे तथा कुछ लोग अपने धर्म की शिक्षा को न समझ कर ईसाइयत धर्म स्वीकार कर लेंगे। आश्चर्य जनक बात यह है कि सूर: फ़ातिह: मक्का में अवतरित हुई तथा उस समय सबसे अधिक विरोध मक्का में बुतों के पूजने वालों की ओर से किया जाता था, परन्तु दुआ यह नहीं सिखाई गई कि इलाही हम बुतों को पूजने वाले न बन जाएँ, बल्कि यह दुआ सिखाई गई कि इलाही हम यहूदी अथवा नसारा न बन जाएँ। अर्थात अल्लाह तआला ने यह पेशगोई फ़रमा दी थी कि मक्का के बुत पूजक सदा के लिए मिटा दिए जाएँगे और यहूदियत तथा इसाईयत शेष रहेंगी जिसके बिगाड़ से बचने के लिए सदैव यह दुआ करना अनिवार्य होगा। जब मेरी तक़रीर हो चुकी तो बाद में बड़े बड़े लोग कहने लगे कि आपने क़ुर्आन ख़ूब पढ़ा हुआ है। हमने तो अपनी पूरी आयु में यह विचार पहली बार सुना है। अत: वास्तविकता यही है कि सारी तफ़सीरों को देख लो, किसी क़ुर्आन के टीकाकार ने

आजतक यह विचार बिन्दु बयान नहीं किया, जबकि मेरी आयु उस समय लगभग बीस वर्ष थी जब अल्लाह तआला ने मुझ पर इस विचार बिन्दु का भेद खोला।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. फ़रमाते हैं कि मैं ग्यारह साल का था कि मेरे दिल में यह विचार उत्पन्न हुआ कि मैं ख़ुदा तआला पर क्यूँ ईमान लाता हूँ, उसके अस्तित्व का प्रमाण क्या है? मैं देर रात तक इसके बारे में सोचता रहा, अंतत: दस ग्यारह बजे मेरे दिल ने निर्णय लिया कि हाँ एक ख़ुदा है। वह मेरे लिए प्रसन्नता की घड़ी थी कि मेरा पैदा करने वाला मुझे मिल गया, सुना हुआ ईमान चेतना के ईमान से बदल गया। मैं अल्लाह तआला से एक लम्बे समय तक दुआ करता रहा कि ख़ुदाया मुझे तेरे अस्तित्व के विषय में कभी सन्देह न हो, आज मैं पैंतीस साल का हूँ अब मैं और अधिक चाहता हूँ कि ख़ुदाया मुझे तेरे अस्तित्व के विषय में सत्यनिष्ठ विश्वास उत्पन्न हो। आप रज़ी. फ़रमाते हैं कि जब ख़ुदा तआला का वजूद मुझ पर प्रकट हो गया तो फिर आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई भी मुझ पर स्पष्ट हो गई। अतएव यह भी एक प्रमाण है अल्लाह तआला का आप रज़ी. के ज्ञान को परिपूर्ण करने का।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ी. यही समझते थे कि यह बच्चा मुस्लेह मौऊद की पुष्टि करने वाला बनेगा। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. ने तशख़ीज़ुल अज़हान नामक रिसाले का परिचय कराने हेतु उसके लक्ष्य एवं उद्देश्य के बारे में एक निबन्ध लिखा जिसकी हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ी. ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के समक्ष विशेष प्रशंसा की परन्तु बाद में व्यक्तिगत रूप से हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. को फ़रमाया कि मियाँ तुम्हारा निबन्ध बहुत अच्छा था किन्तु मेरा दिल ख़ुश नहीं हुआ क्यूँकि तुम्हारे सामने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की रचना बराहीन-ए-अहमदिया उपलब्ध थी और मुझे आशा थी कि तुम उससे बढ़ कर कोई चीज़ लाओगे और उससे लाभ प्राप्त करोगे। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु का अभिप्राय: यह था बाद में आने वाली नस्लों का काम यही होता है कि पिछली आधार शिला को ऊँचा करते रहें। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. फ़रमाते हैं कि यह एक ऐसी बात है कि जिसे आगे आने वाली पीढियाँ यदि मस्तिष्क में रखें तो स्वयं भी बरकतें तथा कृपाएँ प्राप्त कर सकती हैं तथा क़ौम के लिए भी बरकतों एवं कृपाओं का कारण बन सकती हैं परन्तु अपने पूर्वजों से आगे बढऩे का प्रयास नेक बातों में होना चाहिए, यह नहीं कि चोर का बच्चा यह कोशिश करे कि बाप से बढ़ कर चोर हो, अपितु यह अभिप्राय: है कि नमाज़ी आदमी की संतान यह प्रयास करे कि बाप से बढ़ कर नमाज़ी हो। हज़रत ख़लीफ़: अव्वल रज़ी. आप रज़ी. की सेहत तथा ज्ञान को जानने के बावजूद इतने उच्च विचार आप रज़ी. के बारे में रखते थे कि यह बच्चा ऐसा है जिसमें इतनी क्षमता है कि यह उच्चतम निबन्ध लिख सकता है।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी फ़रमाते हैं कि जब डाक्टरों ने कहा कि मेरी दृष्टि नष्ट हो जाएगी तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने मेरे स्वास्थ्य के लिए विशेष रूप से दुआएँ करनी शुरु कर दीं और साथ ही रोज़े रखने शुरु कर दिए। जब आख़री रोज़े की अफ़तारी करने लगे और रोज़ा खोलने के लिए मुंह में कोई चीज़ डाली तो एक दम मैंने आखें खोल दीं और मैंने आवाज़ दी कि मुझे दिखाई देने लगा है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम बार बार मुझे यही केवल यही फ़रमाते थे कि क़ुर्आन का अनुवाद तथा बुख़ारी हज़रत

मौलवी साहब अर्थात हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ी. से पढ़ लो। इसके अतिरिक्त यह भी फ़रमाया था कि कुछ आयुर्वेद भी पढ़ लो क्यूँकि यह हमारी ख़ानदानी विद्या है। अतएव मैंने हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ी. से आयुर्वेद भी पढ़ा, क़ुर्आन करीम की तफ़सीर और बुख़ारी भी, कुछ अरबी भाषा की पत्रिकाएँ भी पढने का सुअवसर मिला, अतएव यह मेरे ज्ञान की स्थिति थी।

अल्लाह तआला ने हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. को ज्ञान से ऐसा परिपूर्ण किया कि आप रज़ी. का बावन वर्षीय जीवन इस पर साक्षी है कि चाहे वह दीन के निबन्ध का सवाल है अथवा किसी दुनियावी निबन्ध का, जब भी आप रज़ी. को किसी विषय पर लिखने तथा बोलने को कहा गया, आप रज़ी. ने ज्ञान एवं विवेक के सागर बहा दिए। असंख्य अवसरों पर आप रज़ी. की तक़रीरों को गैरों ने भी अत्यधिक सराहा तथा समाचार पत्रों ने भी ख़बरें जमाईं।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला ने अपने इलहाम तथा अन्य संकेतों के माध्यम से मुझे बता दिया है वह पेशगोई मेरे अस्तित्व में पूरी हो चुकी है और अब इस्लाम के दुश्मनों पर ख़ुदा तआला ने हुज्जत पूरी कर दी है कि इस्लाम ही ख़ुदा तआला का सच्चा धर्म, मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़ुदा तआला के सच्चे रसूल और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ख़ुदा तआला के सच्चे अवतार हैं।

अत: यह पेशगोई तो पूरी हुई किन्तु पेशगोई के शब्द इन्शाअल्लाह उस समय तक स्थापित रहेंगे जब तक हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का मिशन पूरा न हो जाए और इस्लाम का झंडा पूरे विश्व में न लहराने लग जाए। इस भविष्य वाणी पर हमारे जलसे तभी लाभदायक हैं जब हम इस उद्देश्य को सदैव सम्मुख रखें कि हमने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सम्मान और प्रतिष्ठा को विश्व स्तर पर स्थापित करना है तथा इस्लाम की सच्चाई दुनिया पर ज़ाहिर करके आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के झंडे तले सबको लेकर आना है। आज हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मानने वालों के अतिरिक्त कोई नहीं जिसके द्वारा इस्लाम का झंडा विश्व में दोबारा लहराए, अल्लाह तआला हमें इस काम के करने का सामर्थ्य प्रदान करे। (आमीन)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ
اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَن يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلاَ مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلاَ هَادِىَ لَهٗ
وَاَشْهَدُ أَنْ لَآ اِلٰهَ اِلاَّ اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ. عِبَادَ
اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِى الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ
وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ
وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

☆ ☆ ☆

क़ुरआन-ए-मजीद की 26 आयतों पर आरोपों के उत्तर

(लेखक- मुहम्मद हमीद कौसर, नाज़िर दावत इलाल्लाह मर्कज़िया, उत्तर भारत क़ादियान)

(भाग-4) अनुवादक- सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद M.A.

आरोप आयत नंबर 2 (d)

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا قَاتِلُوا الَّذِيۡنَ يَلُوۡنَكُمۡ مِّنَ الۡكُفَّارِ وَلۡيَجِدُوۡا فِيۡكُمۡ غِلۡظَةً ؕ وَاعۡلَمُوۡۤا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الۡمُتَّقِيۡنَ (सूरः अल् तौबा, सूरः नंबर 9 आयत नंबर 123)

अनुवाद : हे वे लोगो जो ईमान लाए हो अपने उन क़रीबियों से भी लड़ो जो कुफ़्फ़ार में से हैं और चाहिए कि वे तुम्हारे अन्दर सख़्ती महसूस करें और जान लो कि अल्लाह मुत्तक़ियों के साथ है।

आरोप आयत नंबर 2(f)

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا لَا تَتَّخِذُوۡۤا اٰبَآءَكُمۡ وَاِخۡوَانَكُمۡ اَوۡلِيَآءَ اِنِ اسۡتَحَبُّوا الۡكُفۡرَ عَلَى الۡاِيۡمَانِ ؕ وَمَنۡ يَّتَوَلَّهُمۡ مِّنۡكُمۡ فَاُولٰٓـئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوۡنَ (सूरः अल् तौबाा, सूरः नंबर 9 आयत 23)

अनुवाद- हे वे लोगो जो ईमान लाए हो तुम अपने बाप दादा को और अपने भाईयों को मित्र न बनाओ अगर उन्होंने ईमान की बजाए कुफ़्र पसंद कर लिया हो। और तुम में से जो भी उन्हें मित्र बनाएंगे तो यही हैं जो अत्याचारी लोग हैं।

इस सिलसिला में एक उदाहरण महाभारत की जंग का दिया जा चुका है जिस में कौरव और पांडव क़रीबी रिश्तेदार थे परन्तु कृष्ण जी महाराज ने इस जंग में पांडवों का साथ दिया और कोरवों का मुक़ाबला किया। क्योंकि हालात की मांग उस वक़्त उसी कार्य को करने की था।

ईसा मसीह (अलैहिस्सलाम) के क़रीबियों ने जब उसका इन्कार कर दिया और उनकी तक़ज़ीब की तो मसीह ने उन्हें कहा :

(1) हे साँपों के बच्चो तुम बुरे हो कर क्योंकर अच्छी बातें कह सकते हो। (इंजील मति, बाब 12-34)

(2) हे साँपो हे अफ़ई के बच्चो तुम जहन्नुमी सज़ा से क्योंकर बचोगे (इंजील मति बाब 33/23)

याद रहे अल्लाह तआला जिस किसी नबी और रसूल को अपने ज़माने के लोगों की इस्लाह के लिए भेजता था तो वे नबी इस्लाह के बहुत से मुनासिब तरीक़ इख़तियार करता था। यह तरीक़ उन में से एक है।

आरोप आयत नंबर 2 (i)

مَّلۡعُوۡنِيۡنَ ۛۚ اَيۡنَمَا ثُقِفُوۡۤا اُخِذُوۡا وَقُتِّلُوۡا تَقۡتِيۡلًا (सूरः अल् अहज़ाब, सूरत नंबर 33 आयत 62)

अनुवाद : (ये) धुतकारे हुए, जहां कहीं भी पाए जाएं पकड़ लिए जाएं और अच्छी तरह क़तल किए जाएं।

इस आयत की वज़ाहत करते हुए हज़रत मिर्ज़ा ताहिर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह अल् राबे रहमहुल्लाह

फ़रमाते हैं इन आयात में मुनाफ़क़ीन और यहूद में से उन फ़ित्ना परदाज़ों का वर्णन है जो मदीना में मुसलमानों के ख़िलाफ़ झूठी मन घड़त बातें फैलाते रहते रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अल्लाह ने वादा फ़रमाया है कि तू उन पर ग़ालिब आ जाएगा और यह तेरे शहर को छोड़ कर चले जाऐंगे। उस वक़्त यह अल्लाह की लानत के नीचे होंगे और ऐसे हालात होंगे कि जहां कहीं भी वह पाए जाएं उनका दोषारोपण करना और क़तल करना जायज़ होगा।

आरोप आयत नंबर 2 (k)

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ ثُمَّ اَعْرَضَ عَنْهَا ۗ اِنَّا مِنَ الْمُجْرِمِيْنَ مُنْتَقِمُوْنَ

(सूरः अल् सज्दः, सूरः नंबर 32 आयत 23) अनुवाद और कौन उस से ज़्यादा ज़ालिम हो सकता है जो अपने रब की आयात के द्वारा अच्छी तरह नसीहत किया जाए फिर भी उन से मुँह मोड़ ले? यक़ीनन हम मुजरिमों से बदला लेने वाले हैं।

आरोप आयत नंबर 2 (o)

فَلَنُذِيْقَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَذَابًا شَدِيْدًا ۙ وَّلَنَجْزِيَنَّهُمْ اَسْوَاَ الَّذِيْ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ

सूरः हा-मीम अस्सज्दः सूरः नंबर 41 आयत नंबर 28) अनुवाद- अतः हम यक़ीनन उन लोगों को जिन्हों ने कुफ़्र किया सख़्त अज़ाब का मज़ा चखाएंगे और उन्हें उन के बदतरीन आमाल का अवश्य दंड देंगे।

आरोप आयत नंबर 2 (p)

ذٰلِكَ جَزَآءُ اَعْدَآءِ اللّٰهِ النَّارُ ۚ لَهُمْ فِيْهَا دَارُ الْخُلْدِ ۗ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَجْحَدُوْنَ

सूरः हा-मीम अस्सज्दः सूरः नंबर 41 आयत 29) अनुवाद : यह हो कर रहने वाली बात है कि अल्लाह के दुश्मनों का बदला आग है। उनके लिए इस में देर तक रहने का घर है। यह जज़ा है उसकी जो हमारी आयात का वह जान बूझ कर इन्कार किया करते थे।

आरोप नंबर : 2 (s)

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ حَرِّضِ الْمُؤْمِنِيْنَ عَلَى الْقِتَالِ ؕ اِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ عِشْرُوْنَ صٰبِرُوْنَ يَغْلِبُوْا مِائَتَيْنِ ۚ وَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ مِّائَةٌ يَّغْلِبُوْۤا اَلْفًا مِّنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ [(सूरः नम्बर 8/66)

अनुवाद- हे नबी मोमिनों को क़िताल की तरग़ीब दे। अगर तुम में से बीस सब्र करने वाले हों तो वे दो सौ पर ग़ालिब आ जाऐंगे और अगर तुम में से एक सौ (सब्र करने वाले हों) तो वे कुफ़्र करने वालों के एक हज़ार पर ग़ालिब आ जाऐंगे क्योंकि वे ऐसे लोग हैं जो कुछ समझते नहीं।

इस आयत की वज़ाहत करते हुए हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह फ़रमाते हैं कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को हुक्म फ़रमाया गया है कि मोमिनों को (लड़ाई) के लिए तैयार करें। जबकि वे थोड़े हैं लेकिन अल्लाह तआला का यह वादा है कि वे अपने से दस गुना ज़्यादा संख्या पर ग़ालिब

आ सकते हैं। लेकिन यह मुराद नहीं कि हर अकेला व्यक्ति अपने से दस गुना ज़्यादा लोगों पर ग़लबा पालेगा। एक निर्धारित संख्या वर्णन फ़रमाई गई है कि अगर सौ हों तो हज़ार पर ग़लबा पालेंगे जो ठीक सम्भव है।

इस आयत में यह वर्णन है कि तत्काल तुम्हारी कमज़ोरी की हालत है। न पूरी ख़ुराक उपलब्ध है न हथियार उपलब्ध हैं। इस लिए तुम अगर सो हो तो दो सो पर ग़लबा पाओगे। लेकिन जब तुम्हारा रोब क़ायम हो जाएगा तो आने वाली नसलों में हज़ार, दस हज़ार पर भी विजय प्राप्त कर सकोगे। आने वाली नसलों के लिए जो बड़ी फ़तह की पेशगोई फ़रमाई गई है उस की बुनियाद इबतिदाई मोमिनीन ने ही डाली थी।

आरोप नंबर : 2 (n)

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ ؕ وَمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ

सूरः अल् तहरीम, सूरः नंबर 66 आयत नंबर 10) अनुवाद : हे नबी कुफ़्फ़ार से और मुनाफ़क़ीन से जिहाद कर और उनके मुक़ाबला पर सख़्ती कर। और उनका ठिकाना जहन्नुम है और वह बहुत ही बुरा ठिकाना है।

इस आयत की वज़ाहत करते हुए हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह फ़रमाते हैं कि जो जिहाद नफ़स की ख़ातिर नहीं बल्कि केवल अल्लाह तआला की ख़ातिर किया जा रहा हो इस में दुश्मनों से क़िताल के मुक़ाबला पर सख़्ती करने का हुक्म है चाहे दिल कितना ही नरम हो। एक दूसरी आयत से इस सख़्ती का फ़ायदा ये मालूम होता है कि उसके नतीजा में, जो क़िताल में शामिल होने वाले लोग नहीं हैं, वे भी डर जाऐंगे और नाहक़ मुसलमानों से वध नहीं करेंगे जैसा कि फ़रमाया :

فَشَرِّدْ بِهِمْ مَّنْ خَلْفَهُمْ (अल् अन्फ़ाल : 58)

आरोप आयत नंबर 2 (w)

وَدُّوْا لَوْ تَكْفُرُوْنَ كَمَا كَفَرُوْا فَتَكُوْنُوْنَ سَوَآءً فَلَا تَتَّخِذُوْا مِنْهُمْ اَوْلِيَآءَ حَتّٰى يُهَاجِرُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَخُذُوْهُمْ وَاقْتُلُوْهُمْ حَيْثُ وَجَدْتُّمُوْهُمْ ۪ وَلَا تَتَّخِذُوْا مِنْهُمْ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا

सूरः अल् निसा, सूरः नंबर 4 आयत नंबर 90) अनुवाद : वे चाहते हैं कि काश तुम भी इसी तरह कुफ्र करो जिस तरह उन्होंने कुफ्र किया। परिणाम तुम एक ही जैसे हो जाओ। अतः उनमें से कोई दोस्त न बनाया करो यहां तक कि वह अल्लाह की राह में हिज्रत करें। अतः अगर वे पीठ दिखा जाएं तो उनको पकड़ो और उनको क़तल करो जहां कहीं भी तुम उनको पाओ और उनमें से किसी को दोस्त या मददगार न बनाओ।

आरोप नंबर : 2 (x)

قَاتِلُوْهُمْ يُعَذِّبْهُمُ اللّٰهُ بِاَيْدِيْكُمْ وَيُخْزِهِمْ وَيَنْصُرْكُمْ عَلَيْهِمْ وَيَشْفِ صُدُوْرَ قَوْمٍ مُّؤْمِنِيْنَ

(सूरः तौबा सूरः नम्बर 9 आयत नंबर 14) अनुवाद : उनसे लड़ाई करो। अल्लाह उन्हें तुम्हारे हाथों से अज़ाब देगा और उन्हें रुस्वा कर देगा और तुम्हें उनके ख़िलाफ़ नुसरत अता करेगा और मोमिन क़ौम के सीनों को शिफ़ा बख़्शेगा।

आरोप आयत नंबर- 2 (z)

وَاقۡتُلُوۡهُمۡ حَيۡثُ ثَقِفۡتُمُوۡهُمۡ وَاَخۡرِجُوۡهُمۡ مِّنۡ حَيۡثُ اَخۡرَجُوۡكُمۡ وَالۡفِتۡنَةُ اَشَدُّ مِنَ الۡقَتۡلِ ۚ وَلَا تُقٰتِلُوۡهُمۡ عِنۡدَ الۡمَسۡجِدِ الۡحَرَامِ حَتّٰى يُقٰتِلُوۡكُمۡ فِيۡهِ ۚ فَاِنۡ قٰتَلُوۡكُمۡ فَاقۡتُلُوۡهُمۡ ؕ كَذٰلِكَ جَزَآءُ الۡكٰفِرِيۡنَ (सूरः अल् बकरः, सूरः नंबर 2 आयत नंबर 192)

अनुवाद : और (दौरान-ए-क़िताल) उन्हें क़तल करो जहां कहीं भी तुम उन्हें पाओ और उन्हें वहां से निकाल दो-जहाँ से तुम्हें उन्होंने निकाला था। और उपद्रव वध से ज़्यादा खतरनाक होता है। और उनसे मस्जिद हराम के पास क़िताल न करो यहां तक कि वे तुमसे वहां क़िताल करें। अत: अगर वे तुमसे क़िताल करें तो फिर तुम उन को क़तल करो। काफ़िरों का ऐसा ही दंड होता है।

ऊपर वर्णित समस्त आयतें जिनसे कुफ़्फ़ार पर सख़्ती करने का परिणाम निकाला गया है। उसके उत्तर में अहमदिया मुस्लिम जमाअत के संस्थापक की एक तहरीर दर्ज की जा रही है। इस में वर्णित आयतें और उनसे मिलती जुलती आयतें जो क़ुरआन-ए-मजीद में हैं। उन से नकरात्मक परिणाम निकालने वालों के लिए काफ़ी और शाफ़ी उत्तर है।

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "इसके बाद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम गुप्त रूप में मदीना में पहुंचे। और मदीना के अक्सर लोगों ने आपको क़बूल कर लिया। इस पर मक्का वालों का गुस्सा भड़का और अफ़सोस किया कि हमारा शिकार हमारे हाथ से निकल गया। और फिर क्या था। दिन रात इन्हीं योजनाओं में लगे रहते कि किसी तरह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को क़तल कर दें और कुछ थोड़ा गिरोह मक्का वालों का कि जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर ईमान लाया था वह भी मक्का से हिज्रत करके मुख़्तलिफ़ देशों की तरफ़ चले गए। कुछ ने हब्शा के बादशाह की पनाह ले ली थी और कुछ मक्का में ही रहे। इस लिए की वे सफ़र करने के लिए सफ़र का सामान आहार नहीं रखते थे। और वे बहुत दुख दिए गए। क़ुरआन शरीफ़ में उनका वर्णन है कि क्यूँ-कर वे दिन रात फ़र्याद करते थे।

और जब कुफ़्फ़ार क़ुरैश का हद से ज़्यादा ज़ुलम बढ़ गया, और उन्हों ने ग़रीब औरतों और यतीम बच्चों को क़तल करना शुरू किया और कुछ औरतों को ऐसी बेदर्दी से मारा कि उन की दोनों टांगें दो रस्सियों से बांध कर दो उंटों के साथ वे रस्सियाँ ख़ूब जकड़ दीं और उन ऊंटों को दो मुख़्तलिफ़ सिम्तों में दौड़ाया और इस तरह पर वे औरतें दो टुकड़े हो कर मर गईं।

जब बेरहम काफ़िरों का ज़ुलम इस हद तक पहुंच गया। ख़ुदा ने जो आख़िर अपने बंदों पर रहम करता है अपने रसूल पर अपनी वह्यी नाज़िल की कि मज़लूमों की फ़र्याद मेरे तक पहुंच गई। आज मैं इजाज़त देता हूँ कि तुम भी उनका मुक़ाबला करो और याद रखो कि जो लोग बेगुनाह लोगों पर तलवार उठाते हैं। वे तलवार से ही हलाक किए जाऐंगे। परन्तु तुम कोई ज़्यादती मत करो कि ख़ुदा ज़्यादती करने वालों को दोस्त नहीं रखता।

यह है हक़ीक़त इस्लाम के जिहाद की। जिसको निहायत ज़ुलम से बुरे पैराया में वर्णन किया गया

है। निसंदेह ख़ुदा दयालु है। परन्तु जब किसी क़ौम की शरारत हद से गुज़र जाती है। तो वह ज़ालिम को बिना दंड के नहीं छोड़ता।और आप उनके लिए तबाही के सामान पैदा कर देता है। मैं नहीं जानता कि हमारे मुख़ालिफ़ों ने कहाँ से और किस से सुन लिया कि इस्लाम तलवार के ज़ोर से फैला है। ख़ुदा तो क़ुरआन शरीफ़ में फ़रमाता है: لَآ اِكْرَاهَ فِى الدِّيْنِ (सूर: अल् बक़रा, सूर: नंबर 2 आयत 257) अर्थात इस्लाम धर्म में जबर नहीं। तो फिर किस ने जबर का हुक्म दिया। और जबर के कौन से सामान थे। और क्या वे लोग जो जबर से मुसलमान किए जाते हैं उनका यही सिदक़ और यही ईमान होता है कि बग़ैर किसी तनख़्वाह पाने के बावजूद दो तीन सौ आदमी होने के हज़ारों आदमियों का मुक़ाबला करें और जब हज़ार तक पहुंच जाएं तो कई लाख दुश्मन को शिकस्त दे दें। और दीन को दुश्मन के हमलों से बचाने के लिए भेड़ों बकरियों की तरह सिर कटा दें। और इस्लाम की सच्चाई पर अपने ख़ून से मोहरें कर दें। और ख़ुदा की तौहीद के फैलाने के लिए ऐसे आशिक़ हों कि दरवेशाना तौर पर सख़्ती उठा कर अफ्रीक़ा के रेगिस्तान तक पहुँचें और उस मुल्क में इस्लाम को फैला दें। और फिर हर किस्म के कष्ट उठा कर चीन तक पहुंचें न जंग के तौर पर बल्कि केवल दरवेशाना तौर पर। और उस मुल्क में पहुंच कर दावत-ए-इसलाम करें। जिसका नतीजा यह हुआ कि उनके बाबरकत उपदेश से कई करोड़ मुसलमान उस ज़मीन में पैदा हो जाएं। और फिर टाट पोश दरवेशों के रंग में भारत में आएं और बहुत से हिस्सा आर्या वर्त को इस्लाम से मुशर्रफ़ कर दें और यूरोप की हदूद तक ला इलाह इल्लला की आवाज़ पहुंचा दें। तुम ईमान से कहो कि क्या ये काम उन लोगों का है जो जबरन मुसलमान किए जाते हैं। जिनका दिल काफ़िर और ज़बान मोमिन होती है? नहीं बल्कि ये उन लोगों के काम हैं जिनके दिल ईमान के नूर से भर जाते हैं। और जिन के दिलों में ख़ुदा ही ख़ुदा होता है।"

(पैग़ाम-ए-सुलह, रुहानी ख़ज़ायन भाग 23 पृष्ठ-467) **(शेष आगे ...)**

☆ ☆ ☆

पर्दा (हिजाब)

लेखक- फ़ज़ल नासिर, मुरब्बी सिलसिला- शोबा नूरुल इस्लाम

(नोट: इस निबंध की रचना में हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) व खुलफ़ा किराम व जमाअत अहमदिय्या की पुस्तकों से सहायता ली गई है।)

पर्दे का उद्देश्य

पर्दे से प्रायोजन कैद करना नहीं है और न ही इसके द्वारा महिलाओं के अधिकारों का हनन करके उनको उन्नति से वंचित करना है बल्कि इस्लाम धर्म का उद्देश्य इस माध्यम से महिलाओं को सुरक्षा प्रदान करना और एक ऐसे समाज का निर्माण करना है जो पवित्रता और सांस्कृतिक मूल्यों के साथ-साथ महिलाओं में प्राकृतिक रूप से विद्यमान लज्जा के महत्व को समझने वाला हो। पवित्र क़ुरान में जहां महिलाओं को परदे का हुक्म है उससे ठीक पहली आयत में पहले मर्दो को हुक्म दिया गया है कि वह अपनी नज़रें नीची रखा करें और औरतों को पटर पटर देखते न रहा करें लेकिन अधिकतर पुरुष क्योंकि इस हुक्म पर अमल नहीं करते इसलिए औरतों को हुक्म है कि वह अपनी सुरक्षा के लिए पर्दा करें और क़ुरान से यह भी साबित है कि महिलाओं को बोलचाल में भी अपना रौब रखना चाहिए और लजाकर बात नहीं करनी चाहिए ताकि उनकी नरम बात से कोई गलत मतलब न निकाले अत: पर्दा एक प्रकार की रोक है ताकि गैर मर्द या औरत पश्चिमी संस्कृति की भांति आज़ादाना तौर पर एक-दूसरे से मेल मिलाप न रखें जिससे आगे चलकर अनेक प्रकार की समस्याएं उत्पन्न होती है।

पवित्र क़ुरान में अल्लाह तआला फ़रमाता है :

قُلْ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ يَغُضُّوْا مِنْ اَبْصَارِهِمْ وَيَحْفَظُوْا فُرُوْجَهُمْ ؕ ذٰلِكَ اَزْكٰى لَهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا يَصْنَعُوْنَ ۔ وَقُلْ لِّلْمُؤْمِنٰتِ يَغْضُضْنَ مِنْ اَبْصَارِهِنَّ وَيَحْفَظْنَ فُرُوْجَهُنَّ وَلَا يُبْدِيْنَ زِيْنَتَهُنَّ اِلَّا مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَلْيَضْرِبْنَ بِخُمُرِهِنَّ عَلٰى جُيُوْبِهِنَّ ۖ --- وَلَا يَضْرِبْنَ بِاَرْجُلِهِنَّ لِيُعْلَمَ مَا يُخْفِيْنَ مِنْ زِيْنَتِهِنَّ ؕ وَتُوْبُوْٓا اِلَى اللّٰهِ جَمِيْعًا اَيُّهَ الْمُؤْمِنُوْنَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ (सूरह नूर: आयत- 31,32)

अनुवाद - "मोमिन पुरुषों को यह कह दे कि अपनी आंखें नीची रखा करें और अपने गुप्तांगों की सुरक्षा किया करें यह बात उनके लिए अधिक पवित्रता का कारण है निस्संदेह अल्लाह जो वे करते हैं उससे सदा अवगत रहता है और मोमिन स्त्रियों से कह दे कि वे अपनी आंखें नीची रखा करें और अपने गुप्तांगों की सुरक्षा करें तथा अपनी सुंदरता प्रकट न करें सिवाए उसके कि जो उसमें से स्वयं प्रकट हो जाए और अपने वक्षस्थलों (सीनों) पर अपनी ओढ़निया डाल लिया करें....और वे अपने पांव जमीन पर इस प्रकार न पटकें कि लोगों पर वो ज़ाहिर कर दिया जाये जो (औरतें सामान्यतया) अपने सौन्दर्य में से छुपाती हैं। और हे मोमिनो ! तुम सब के सब अल्लाह की ओर प्रायश्चित करते हुए झुको ताकि तुम सफल हो जाओ।

يَاَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّاَزْوَاجِكَ وَبَنٰتِكَ وَنِسَآءِ الْمُؤْمِنِيْنَ يُدْنِيْنَ عَلَيْهِنَّ مِنْ جَلَابِيْبِهِنَّ ؕ
ذٰلِكَ اَدْنٰٓى اَنْ يُّعْرَفْنَ فَلَا يُؤْذَيْنَ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا

अनुवाद - "हे नबी तू अपनी पत्नियों और अपनी बेटियों और मोमिनों की स्त्रियों से कह दे कि वे अपनी चादरों को अपने ऊपर झुका दिया करें यह इस बात के अधिक निकट है कि वे पहचानी जाएं और उन्हें कष्ट न दिया जाए और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला और बार-बार दया करने वाला है।"

(सूरह अल-अहज़ाब : आयत 60)

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम (1835-1908 ई) फरमाते हैं :

"आजकल पर्दे पर हमले किए जाते हैं परंतु ये लोग नहीं जानते कि इस्लामी पर्दे से अभिप्राय कैद नहीं बल्कि एक प्रकार की रोक है ताकि ग़ैर पुरुष व महिला एक दूसरे को देख न सकें। जब पर्दा होगा ठोकर से बचेंगे। एक न्याय-संगत कह सकता है ऐसे लोगों में जहां गैर मर्द और औरत बिना रोक-टोक और भयहीन होकर मिल सकें, सैरें करें किस प्रकार कामिच्छाओं से प्रेरित होकर ठोकर न खाएंगे। कभी सुनने और देखने में आया है कि ऐसा समाज ग़ैर मर्द और औरत के एक मकान में अकेले रहने को जबकि दरवाजा भी बंद हो कोई दोष नहीं समझता, यह मानव संस्कृति है। इन्हीं दोषों को रोकने के लिए इस्लाम के संस्थापक ने वह बातें करने की आज्ञा ही नहीं दी जो किसी की ठोकर का कारण हो ऐसे अवसरों पर यह कह दिया कि जहां इस प्रकार दो पराए मर्द औरत जमा हों तीसरा उनमें शैतान होता है। उन बुरे परिणामों पर ग़ौर करो जो यूरोप इस बुरी शिक्षा से भुगत रहा है। कुछ स्थानों पर बिल्कुल शर्मनाक वैश्याओं का सा जीवन व्यतीत किया जा रहा है। यह ऐसी ही शिक्षाओं का परिणाम है यदि किसी चीज़ को भ्रष्टाचार से बचाना चाहते हो तो उसकी सुरक्षा करो लेकिन यदि सुरक्षा न करो और यह समझ रखो कि भले मानस लोग हैं तो याद रखो कि अवश्य वह चीज़ नष्ट होगी। इस्लामी शिक्षा कैसी पवित्र शिक्षा है कि जिसने मर्द और औरत को अलग अलग रखकर ठोकर से बचाया है और मानव का जीवन हराम और कड़वा नहीं किया जिससे यूरोप ने आए दिन के गृहयुद्ध और आत्महत्याएं देखीं। कुछ शरीफ औरतों का वैश्याओं का सा जीवन व्यतीत करना एक व्यावहारिक परिणाम उस आज्ञा का है जो पराई औरत को देखने के लिए दी गई।"

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 1, नवीन एडिशन, पृष्ठ 29 30)

पर्दा अज्ञानता और प्रतिगामी सोच का प्रतीक नहीं है और न ही यह महिलाओं के विकास और उन्नति की राह में बाधा उत्पन्न करने वाली कोई चीज़ है। वास्तव में इस्लाम प्रकृति का धर्म है और जिस ख़ुदा ने मानवजाति को पैदा किया वह उसके स्वभाव से भी अच्छी तरह परिचित है जैसा कि फ़रमाया-

فَأَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّينِ حَنِيفًا فِطْرَتَ اللَّهِ الَّتِي فَطَرَ النَّاسَ عَلَيْهَا لَا تَبْدِيلَ لِخَلْقِ اللَّهِ ذَٰلِكَ الدِّينُ الْقَيِّمُ
وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ (सूरह रूम : आयत- 31)

अत: मनुष्य के स्वभाव के अनुकूल ही इस्लाम धर्म की समस्त शिक्षाएं है इस परिपेक्ष में जब हम महिलाओं के स्वभाव को देखें तो मालूम होगा कि स्वाभाविक रूप से उनके अंदर पुरुषों की तुलना में

लज्जा अधिक होती है जब कभी ऐसा संयोग हो कि कोई व्यक्ति किसी महिला को ग़लत नज़र से देखता है तो वह तुरंत अपनी ओढ़नी को इस प्रकार डाल लेती है कि उसे उस व्यक्ति के समक्ष लज्जित न होना पड़े अब आज़ादी के नाम पर महिलाओं की ओढ़नियों पर आरोप लगाना या फिर महिलाओं को अपनी सुविधानुसार ओढ़नियां ओढ़ने का अधिकार उनसे छीनना तर्कहीन और अन्यायपूर्ण है बल्कि counter-productive भी। ऐसे वातावरण की कल्पना कीजिए जहां पुरुष व महिलाएं दोनों इकट्ठे काम कर रहे हों और किसी महिला को ऐसा संयोग हो जैसा की अभी बयान हुआ है तो ऐसी अवस्था में न तो उस महिला का और ना ही उस व्यक्ति का ध्यान काम पर लग सकता है और दूसरे लोग भी इससे disturb होंगे इसके अतिरिक्त जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) के उपरोक्त कथन से स्पष्ट है कि ऐसा समाज जहां मर्द औरत का मेल मिलाप आम बात हो उसके दीर्घकालीन दुष्प्रभाव भी बहुत हैं ऐसे समाज में गृह युद्ध और आत्महत्याएं भी बहुत बढ़ जाती हैं। इस संबंध में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह पंचम फरमाते हैं :

"तो आज भी देखलें कि जिस बात से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अवगत करा रहे हैं जैसा कि मैं पहले भी कह आया हूं इसी कारण से संदेह पैदा हुआ और इस संदेह के कारण घर उजड़ते हैं और तलाकें होती हैं। यहां जो इन पश्चिमी देशों में 70, 80 प्रतिशत तलाकों का अनुपात है यह आजाद समाज के कारण ही है यह चीज़ें बुराइयों की ओर ले जाती हैं और फिर घर उजड़ने शुरू हो जाते हैं।"

(महिलाओं को सम्बोधन जलसा सालाना, यू के, 31 जुलाई, 2004)

आजकल के समाज में पर्दे की आवश्यकता

यह ज़माना एक ऐसा ज़माना है यदि किसी ज़माने में पर्दे की रसम न होती तो इस ज़माने में अवश्य होनी चाहिए क्योंकि यह कलयुग है और धरती पर पाप और मदिरा का ज़ोर है और दिलों में नास्तिकता और अधर्म के विचार फैल रहे हैं और ख़ुदा तआला के आदेशों की महानता दिलों से उठ गई है ज़ुबानों पर सब कुछ है और भाषण तर्क और फ़लसफ़ा से भरे हुए हैं लेकिन दिल अध्यात्म से खाली हैं ऐसे समय में कब उचित है कि अपनी ग़रीब बकरियों को भेड़ियों के वनों में छोड़ दिया जाए।" (मलफ़ूज़ात जिल्द 1, पृष्ठ, 297-298)

फिर फ़रमाते हैं :

"मर्दों की हालत का अंदाज़ा करो कि वे कैसे बेलगाम घोड़े की भांति हो गए हैं न ख़ुदा का डर है न परलोक का विश्वास है संसार के सुखों को अपना पूज्य बना रखा है। अत: सबसे पहले ज़रूरी है कि इस आज़ादी और बेपर्दगी से पहले मर्दों के आचरण को ठीक करो यदि यह ठीक हो जाएं और मर्दों में कम से कम इतनी ताकत हो कि वे अपनी काम इच्छाओं से पराजित न हो सकें तो उस समय इस बहस को छेड़ो कि क्या पर्दा ज़रूरी है या नहीं अन्यथा मौजूदा हालात में इस बात पर बल देना कि आज़ादी और बेपर्दगी होनी चाहिए मानो बकरियों को शेरों के आगे रख देना है.......... कम से कम अपने conscience से ही काम लें कि क्या मर्दों की हालत ऐसी सुधर गई है कि औरतों को बेपर्दा उनके सामने रखा जाए।"

(मलफ़ूज़ात जिल्द 4, पृष्ठ, 104-106)

पर्दे का स्तर और कट्टरता की उपेक्षा :

क़ुरान शरीफ़ और आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत से साबित है कि चेहरा भी पर्दे में शामिल है इसी तरह बाल भी नज़र नहीं आने चाहियें। इस संबंध में हुज़ूर अनवर फ़रमाते हैं :

".......तो इस व्याख्या से पर्दे की सीमा भी काफ़ी हद तक स्पष्ट हो गई कि क्या सीमा है चेहरा छुपाने का बहरहाल हुक्म है। इस हद तक चेहरा छुपाया जाए कि बेशक नाक नंगा हो और आंखें नंगी हों ताकि देख भी सके और सांस भी ले सके।"(ख़ुत्बा जुमा, 30 जनवरी 2004)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़िअल्लाहु तआला अन्हु إِلَّا مَا ظَهَرَ مِنْهَا अर्थात सिवाय उसके जो आप ही ज़ाहिर हो (शरीर का वह भाग जो स्वयं ही जाहिर हो उसका पर्दा करने की आवश्यकता नहीं है) की व्याख्या करते हुए फ़रमाते हैं :

"मेरे निकट स्वयं ही ज़ाहिर होने वाली मोटी चीज़ें दो हैं अर्थात कद और शरीर की हरकत और चाल लेकिन बौद्धिक रूप से स्पष्ट है कि महिला के काम के लिहाज़ से या मजबूरी के लिहाज़ से जो चीज़ स्वयं ही ज़ाहिर हो वह पर्दे में दाख़िल नहीं। अत: इसी आज्ञा के अधीन डॉक्टर औरतों की नब्ज देखता है क्योंकि बीमारी मजबूर करती है कि उस चीज़ को ज़ाहिर कर दिया जाए। यदि किसी घराने के काम ऐसे हों जहां महिलाओं को बाहर खेतों में या मैदानों में काम करना पड़े तो उनके लिए आंखों से लेकर नाक तक का भाग खुला रखना जायज़ होगा और पर्दा टूटा हुआ नहीं समझा जाएगा क्योंकि उसे खोले बिना वे काम नहीं कर सकतीं और जो भाग जीवन यापन और रोज़गार की आवश्यकताओं के लिए खोलना पड़ता है उसका खोलना पर्दे के हुक्म में ही शामिल है लेकिन जिस महिला के काम उसे मजबूर नहीं करते कि वह खुले मैदानों में निकल कर काम करे उसे यह छूट नहीं होगी अत: إِلَّا مَا ظَهَرَ مِنْهَا के अधीन किसी मजबूरी के कारण जितना भाग नंगा करना पड़े किया जा सकता है। (तफ़्सीर कबीर, जिल्द 6, पृष्ठ 298 -299)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

"प्रत्येक अच्छी हैसियत वाले व्यक्ति से ईर्ष्या रखने वाले लोग अवश्य होते हैं यही हाल धार्मिक बातों का है शैतान भी सुधार का शत्रु है अत: मनुष्य को चाहिए कि अपना हिसाब साफ रखे और ख़ुदा से मामला ठीक रखे ख़ुदा को राजी करे फिर किसी से न डरे और न किसी की परवाह करे ऐसी बातों से बचे जिनसे स्वयं ही दंडित होता हो मगर यह सब कुछ भी ग़ैबी मदद और ख़ुदा की ओर से प्रदान सामर्थ्य के बिना नहीं हो सकता केवल मनुष्य के प्रयास कुछ बना नहीं सकते जब तक ख़ुदा की कृपा भी साथ न हो मनुष्य कमज़ोर है गलतियों से भरा पड़ा है मुश्किलें चारों ओर से घेरे हुए हैं अत: प्रार्थना करनी चाहिए कि अल्लाह तआला नेकी करने का सामर्थ्य प्रदान करे और ग़ैबी मदद और कृपा का वारिस बना दे।"

(मलफ़ूज़ात जिल्द 10, पृष्ठ, 252)

☆ ☆ ☆

अपने सत्यापन हेतु ख़ुदाई निशानों का उल्लेख

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब, मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के अपने शब्दों में

अनुवादक- डा० अन्सार अहमद

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी को अल्लाह तआला ने इस युग का सुधारक और मसीह मौऊद बना कर भेजा है लेकिन अधिकतर लोगों ने आपको स्वीकार नहीं किया और आप ने बार-बार दुनिया में ऐलान किया पुस्तकें लिखीं कि ख़ुदा ने मुझे इस दौर में सुधारक बना कर भेजा है वह मुझसे बातें करता है, मुझे इल्हाम करता है और भविष्य की खबरें मुझे बताता है। आप ने बहुत सी भविष्यवाणियाँ कीं, जो पूरी हुईं। अत: आप ने अपने सत्यापन के प्रमाण देते हुए अपनी एक पुस्तक "हक़ीक़तुल वह्यी" में लिखा:- "..अब हम उनके मुकाबले पर यह दिखाना चाहते थे कि ख़ुदा तआला के आकाशीय निशान हमारी गवाही के लिए कितने हैं परन्तु खेद कि यदि वे सभी लिखे जाएं तो हज़ार भागों की पुस्तक में भी उनकी गुंजायश नहीं हो सकती। इसलिए हम केवल नमूने के तौर पर उनमें से एक सौ चालीस निशानों का उल्लेख करते हैं...(यहाँ केवल कुछ निशान लिखे जाते हैं- एडिटर)

4. चौथा निशान- एक नवीन सवारी का निकलना है जो मसीह मौऊद के प्रकट होने का विशेष लक्षण है। जैसा कि पवित्र क़ुर्आन में उल्लेख है - وَإِذَا الْعِشَارُ عُطِّلَتْ अर्थात् अन्तिम युग वह है जब ऊंटनियां बेकार हो जाएंगी तथा ऐसा ही मुस्लिम की हदीस में है - وليترکن القلاص فلا یسعٰی علیہا۔ अर्थात् उस युग में ऊंटनियां बेकार हो जाएंगी और उन पर कोई यात्रा नहीं करेगा। हज के दिनों में मक्का से मदीना की ओर ऊंटनियों पर यात्रा होती है। अब वह समय बहुत निकट है कि इस यात्रा के लिए रेल तैयार हो जाएगी तब इस यात्रा पर यह चरितार्थ होगा कि وليترکن القلاص فلا یسعٰی علیہا۔

5. पांचवां निशान- हज का बन्द होना है जो सही हदीस में आ चुका है कि मसीह मौऊद के समय में हज करना किसी अवधि तक बन्द हो जाएगा। अत: प्लेग के कारण 1899-1900 ई. इत्यादि में यह निशान भी प्रकट हो गया।...

21. इक्कीसवां निशान- यह है कि समय लगभग तीस वर्ष का हुआ है कि मेरे पिता श्री ख़ुदा उन्हें क्षमा करे अपनी अन्तिम आयु में बीमार हुए तो जिस दिन उन की मृत्यु प्रारब्ध थी दोपहर के समय मुझे इल्हाम हुआ وَالسَّمَاءِ وَالطَّارِق और साथ ही हृदय में डाला गया कि यह उनकी मृत्यु की ओर संकेत है और इसके ये अर्थ हैं कि क़सम है आकाश की और क़सम है उस घटना की जो सूर्य-अस्त होने के पश्चात् घटित होगी। वास्तव में यह ख़ुदा तआला की ओर से अपने बन्दे को मृत्युशोक पर धैर्य बंधाना था। तब मैंने समझ लिया कि मेरे पिता श्री का सूर्यास्त के पश्चात् निधन हो जाएगा। कई अन्य लोगों को इस इल्हाम की सूचना दी गई। मुझे क़सम है अल्लाह तआला की जिसके हाथ में मेरे प्राण हैं, जिस पर झूठ बोलना एक शैतान और ला'नती का कार्य है कि इल्हाम के अनुसार ही प्रकट हुआ तथा उस दिन मेरे पिता श्री का मूल रोग जो गुर्दे की पीड़ा थी दूर हो चुकी थी केवल थोड़ी सी पेचिश शेष थी तथा स्वयं ही बिना किसी सहारे के शौचादि के लिए जाते

थे। जब सूर्य-अस्त हुआ तथा वह शौचादि से आकर चारपाई पर बैठे तो बैठते ही प्राण निकलने (चन्द्रा) की अवस्था आरंभ हुई और उसी अवस्था में उन्होंने मुझे कहा कि देखा यह क्या है और फिर लेट गए। इससे पूर्व मुझे कभी इस बात को देखने का संयोग नहीं हुआ कि कोई व्यक्ति चन्द्रा की अवस्था में बोल सके और इतनी सुस्पष्टता एवं दृढ़ता से बात कर सके। तत्पश्चात् ठीक उस समय जबकि सूर्य अस्त हुआ वह इस नश्वर संसार से कूच कर गए। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहि राजिऊन। यह उन सब इल्हामों से प्रथम इल्हाम और प्रथम भविष्यवाणी थी जो ख़ुदा ने मुझ पर प्रकट की। दोपहर के समय ख़ुदा ने मुझे इसकी सूचना दी कि ऐसा होने वाला है और सूर्यास्त के पश्चात् यह सूचना पूर्ण हो गई तथा मेरे लिए गर्व का स्थान है और मैं इस बात को नहीं भूलूंगा कि मेरे पिता श्री के निधन के समय ख़ुदा तआला ने मृत्यु शोक पर ढारस दिया और मेरे पिता के निधन की क़सम खाई जिस प्रकार कि आकाश की क़सम खाई। जिन लोगों में शैतानी आत्मा उत्तेजित हो रही है वे आश्चर्य करेंगे कि ऐसा क्योंकर हो सकता है कि ख़ुदा किसी को इतना सम्मान दे कि उसके पिता के निधन को एक महान आघात ठहरा कर उसकी क़सम खाए, किन्तु मैं पुन: उस प्रभुत्वशाली एवं प्रतापी ख़ुदा की क़सम खा कर कहता हूं कि यह घटना सत्य है और वह ख़ुदा ही था जिससे मातमपुर्सी के तौर पर मुझे सूचना दी और कहा कि وَالسَّمَاءِ وَالطَّارِق और इसी के अनुसार प्रकट हुआ। इस पर ख़ुदा की हर प्रकार से प्रशंसा।

22. बाईसवां निशान - यह है कि जैसा कि मैं अभी लिख चुका हूं, जब मुझे यह सूचना दी गई कि मेरे पिता श्री का सूर्य अस्त होने के पश्चात् निधन हो जाएगा तो मानव होने के नाते मुझे इस सूचना के सुनने से दुख पहुंचा और चूंकि हमारी आजीविका के अधिकांश साधन उन्हीं के जीवन से सम्बद्ध थे तथा वह अंग्रेज़ी सरकार से पेन्शन पाते थे तथा एक बड़ी धनराशि इनाम की पाते थे जो उनके जीवित रहने तक थी। इसलिए मन में यह विचार आया कि उनकी मृत्योपरांत क्या होगा। हृदय में भय उत्पन्न हुआ कि कदाचित हम पर दरिद्रता और कष्ट के दिन आएंगे और यह विचार विद्युत की चमक की भांति एक सेकण्ड से भी कम समय में हृदय में गुज़र गया। तब उसी समय ऊंघने की अवस्था छा गई और यह दूसरा इलहाम हुआ اَلَيْسَ اللّٰهُ بِكَافٍ عَبْدَهٗ अर्थात् क्या ख़ुदा अपने बन्दे के लिए पर्याप्त नहीं है। ख़ुदा के इस इल्हाम के साथ हृदय ऐसा सुदृढ़ हो गया कि जैसे एक अत्यन्त पीड़ादायक घाव किसी मरहम से तुरन्त ही ठीक हो जाता है। वास्तव में यह बात अनेक बार अनुभव में आ चुकी है कि ख़ुदा की वह्यी में हार्दिक सांत्वना देने के लिए एक व्यक्तिगत विशेषता है और इस विशेषता का मूल वह विश्वास है जो ख़ुदा की वह्यी पर हो जाता है। खेद उन लोगों के कैसे इल्हाम हैं कि इल्हाम के दावे के बावजूद यह भी कहते हैं कि ये हमारे इल्हाम काल्पनिक बातें हैं न मालूम ये शैतानी हैं या रहमानी अर्थात् ख़ुदा की ओर से। ऐसे इल्हामों की हानि उनके लाभ से अधिक है परन्तु मैं ख़ुदा तआला की क़सम खाकर कहता हूं कि मैं इन इल्हामों पर उसी प्रकार ईमान लाता हूं जैसा कि पवित्र क़ुर्आन पर तथा ख़ुदा की अन्य किताबों पर और जिस प्रकार मैं पवित्र क़ुर्आन को निश्चित एवं अटल तौर पर ख़ुदा की वाणी (कलाम) जानता हूं उसी प्रकार इस कलाम को भी जो मुझ पर उतरता है ख़ुदा की वाणी विश्वास करता हूं क्योंकि इसके साथ ख़ुदा की झलक और प्रकाश देखता हूं और उसके साथ ख़ुदा की शक्तियों के नमूने देखता हूं। अत: जब मुझे यह इल्हाम हुआ कि اَلَيْسَ اللّٰهُ بِكَافٍ عَبْدَهٗ तो मैंने उसी समय समझ लिया कि ख़ुदा मुझे

नष्ट नहीं करेगा। अत: मैंने मलावामल नामक एक हिन्दू खत्री को जो क़ादियान का निवासी है और अभी तक जीवित है वह इल्हाम लिख कर दिया और उसे सारा वृत्तान्त सुनाया और उसे अमृतसर भेजा ताकि हकीम मौलवी मुहम्मद शरीफ़ कलानौरी के माध्यम से किसी नगीने में खुदवाकर और मुहर बनवा कर ले आए। मैंने उस हिन्दू को इस कार्य के लिए केवल इस उद्देश्य से चुना ताकि वह इस महानतम भविष्यवाणी का साक्षी हो जाए तथा मौलवी मुहम्मद शरीफ़ भी साक्षी हो जाए। अत: मौलवी साहिब के द्वारा वह अंगूठी पांच रुपए के व्यय पर तैयार होकर मेरे पास पहुंच गई जो अब तक मेरे पास मौजूद है जिसका निशान यह है-
यह इल्हाम उस युग में हुआ था जबकि हमारी आजीविका तथा आराम का सम्पूर्ण आधार हमारे पिता श्री की एक आय पर निर्भर था तथा बाहरी लोगों में से एक व्यक्ति भी मुझे नहीं जानता था और मैं एक अज्ञात व्यक्ति था जो क़ादियान जैसे वीरान गांव में एक अज्ञात कोने में पड़ा हुआ था। तत्पश्चात् ख़ुदा ने अपनी भविष्यवाणी के अनुसार एक संसार को मेरी ओर फेर दिया और लगातार ऐसी विजयों से आर्थिक सहायता प्रदान की कि जिसका आभार प्रकट करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं। मुझे अपनी हालत पर दृष्टि डाल कर इतनी भी आशा न थी कि दस रुपए मासिक भी आएंगे परन्तु ख़ुदा तआला जो निर्धनों को धूल में से उठाता तथा अभिमानियों को धूल में मिलाता है, उसी ने मेरी ऐसी सहायता की कि मैं निश्चय ही कह सकता हूं कि अब तक तीन लाख के लगभग धनराशि आ चुकी है और कदाचित इससे अधिक हो तथा इस आय को इस बात से विचार कर लेना चाहिए कि वर्षों से केवल लंगरखाना का डेढ़ हज़ार रुपया मासिक तक खर्च हो जाता है अर्थात् औसत की दृष्टि से तथा व्यय की अन्य शाखाओं की अर्थात् मदरसा इत्यादि तथा पुस्तकों का प्रकाशन इसके अतिरिक्त है। अत: देखने की आवश्यकता है कि यह भविष्यवाणी अर्थात् اَلَيْسَ اللّٰهُ بِكَافٍ عَبْدَهٗ किस स्पष्टता, दृढ़ता और शान से पूर्ण हुई। क्या यह किसी झूठ गढ़ने वाले का कार्य है या शैतानी भ्रम हैं। कदापि नहीं अपितु यह उस ख़ुदा की वाणी है जिसके अधिकार में मान और अपमान, उत्थान और पतन है। यदि मेरे इस बयान का विश्वास न हो तो बीस वर्ष के सरकारी रजिस्टरों को देखो ताकि मालूम हो कि इस समस्त अवधि में आय का द्वार कितना खोला गया है, जबकि यह आय केवल डाक द्वारा तक सीमित नहीं रही अपितु हज़ारों रुपए की आय इस प्रकार ही होती है कि लोग स्वयं क़ादियान में आकर देते हैं तथा ऐसी आय जो लिफ़ाफ़ों में नोटों द्वारा भेजी जाती है।...

30. तीसवां निशान - डोई नामक एक व्यक्ति अमरीका का रहने वाला था। उसने पैग़म्बर (अवतार) होने का दावा किया था तथा इस्लाम का कट्टर विरोधी था। उसका विचार था कि मैं इस्लाम का समूल विनाश करूंगा। हज़रत ईसा को ख़ुदा मानता था। मैंने उसकी ओर लिखा था कि मेरे साथ मुबाहला करे। इसके साथ यह भी लिखा था कि यदि वह मुबाहला नहीं करेगा तब भी ख़ुदा उसको तबाह कर देगा। अत: यह भविष्यवाणी अमरीका के कई अखबारों में प्रकाशित की गई और अपनी अंग्रेज़ी पत्रिका में भी प्रकाशित की गई। अन्तत: इस भविष्यवाणी का परिणाम यह हुआ कि कई लाख रुपए की सम्पत्ति से उसे हाथ धोने पड़े और बड़े अपमान का सामना करना पड़ा तथा स्वयं लक़्वा (पक्षाघातों में ग्रस्त हो गया, ऐसा कि अब वह एक पग भी स्वयं नहीं चल सकता। प्रत्येक स्थान पर उठा कर ले जाते हैं। अमरीका के डाक्टरों ने परामर्श दिया है कि अब यह

उपचार योग्य नहीं, कदाचित कुछ माह तक मर जाएगा। ...

34. चौतीसवां निशान- यह है कि मेरा एक लड़का मृत्यु को प्राप्त हो गया था तथा विरोधियों ने जैसा कि उनका स्वभाव है। उस लड़के की मृत्यु पर बड़ी प्रसन्नता प्रकट की थी तब ख़ुदा ने मुझे शुभ सन्देह देकर कहा कि इसके बदले में शीघ्र एक लड़का पैदा होगा जिसका नाम महमूद होगा तथा मुझे उस का नाम एक दीवार पर लिखा हुआ दिखाया गया। तब मैंने एक हरे रंग के विज्ञापन में हज़ारों समर्थकों और विरोधियों यह भविष्यवाणी प्रकाशित की तथा अभी सत्तर दिन पहले लड़के की मृत्यु पर नहीं गुज़रे थे कि यह लड़का पैदा हो गया और उसका नाम महमूद अहमद रखा गया।...

44. चवालीसवां निशान- यह है कि सरदार नवाब मुहम्मद अली ख़ान साहिब रईस मालेरकोटला का पुत्र अब्दुर्रहमान खान तीव्र टायफायड के रोग से रोगग्रस्त हो गया था तथा बचने का कोई उपाय दिखाई नहीं देता था जैसा कि वह मृतक के रूप में था। उस समय मैंने उसके लिए दुआ की तो ज्ञात हुआ कि प्रारब्ध अटल के समान है। तब मैंने ख़ुदा के समक्ष विनती की कि हे मेरे उपास्य ! मैं इसके लिए सिफ़ारिश करता हूं। इसके उत्तर में ख़ुदा तआला ने कहा -من ذا الذی یشفع عندہ الا باذنہ अर्थात् किस में शक्ति है कि ख़ुदा की आज्ञा के बिना किसी की सिफ़ारिश कर सके। तब मैं खामोश हो गया। तत्पश्चात् बिना विलम्ब यह इल्हाम हुआ - انک انت المجاز अर्थात् तुझे सिफ़ारिश करने की अनुमति दी गई। तब मैंने बड़े विनय एवं गिड़गिड़ाकर दुआ की तो ख़ुदा तआला ने मेरी दुआ स्वीकार की और लड़का मानो क़ब्र में से निकल कर बाहर आ गया तथा स्वस्थ होने के लक्षण प्रकट हुए। वह इतना दुर्बल हो गया था कि एक लम्बे समय के पश्चात् वह अपनी पूर्व अवस्था पर आया तथा स्वस्थ हो गया और जीवित मौजूद है।

45. पैंतालीसवां निशान- यह है कि मेरे प्रिय मित्र मौलवी नूरदीन साहिब के एक लड़के का निधन हो गया था और वही एकमात्र लड़का था। उसके निधन पर कुछ नादान शत्रुओं ने बहुत प्रसन्नता प्रकट की। इस विचार से कि मौलवी साहिब निर्वंश रह गए। तब मैंने उनके लिए बहुत दुआ की। दुआ के पश्चात् ख़ुदा तआला की ओर से मुझे यह सूचना मिली कि तुम्हारी दुआ से एक लड़का पैदा होगा तथा इस बात का निशान कि वह केवल दुआ के द्वारा पैदा किया गया है यह बताया गया कि उसके शरीर पर बहुत से फोड़े निकल आएंगे। अत: वह लड़का पैदा हुआ जिसक नाम अब्दुल हयी रखा गया। उसके शरीर पर बहुत से असाधारण फोड़े निकले जिन के दाग़ अब तक मौजूद हैं। ये फोड़ों का निशान लड़के के जन्म से पूर्व विज्ञापन द्वारा प्रकाशित किया गया था।

52. बावनवां निशान - यह कि पंडित दयानन्द जो आर्यों के लिए बतौर गुरू के था। जब उसका उपद्रव सीमा से बढ़ गया तो मुझे दिखाया गया कि अब उसके जीवन का अन्त है। अत: उसी वर्ष में उसका निधन हो गया। मैंने शरमपत नामक एक आर्य को जो क़ादियान निवासी है यह भविष्यवाणी घटित होने से पूर्व बता दी थी और वह अब तक जीवित है।

53. तिरेपनवां निशान - यह है कि इसी शरमपत का एक भाई विशंबर दास एक फौजदारी मुक़द्दमे में शायद डेढ़ वर्ष के लिए क़ैद हो गया था। तब शरमपत ने अपनी व्याकुलता की अवस्था में मुझ से दुआ की विनती की अत: मैंने उसके बारे में दुआ की। तो मैंने इसके पश्चात् स्वप्न में देखा कि मैं उस आफ़िस में गया हूं जहां

क़ैदियों के नामों के रजिस्टर थे तथा उन रजिस्टरों में प्रत्येक क़ैदी की क़ैद की अवधि लिखी थी। तब मैंने वह रजिस्टर खोला जिसमें विशम्बर दास की क़ैद के बारे में लिखा था कि इतनी क़ैद है। मैंने अपने हाथ से उसकी क़ैद की आधी अवधि काट दी। जब उसकी क़ैद के बारे में चीफ़ कोर्ट में अपील की गई तो मुझे दिखाया गया कि मुक़द्दमे का परिणाम यह होगा कि मुकद्दमे की मिस्ल ज़िले में वापस आएगी तथा विशम्बर दास की आधी क़ैद कम की जाएगी किन्तु बरी नहीं होगा। मैंने वे समस्त परिस्थितियां उसके भाई लाला शरमपत को मुकद्दमे का परिणाम घोषित होने से पूर्व बता दीं थीं और अन्ततः ऐसी ही हुआ जो मैंने कहा था।...

63. तिरेसठवां निशान - बराहीन अहमदिया में मेरे बारे में ख़ुदा तआला की यह भविष्यवाणी है कि क़त्ल इत्यादि के षड्यंत्रों से मैं बचाया जाऊंगा। अतः आज तक अनेकों आक्रमणों के बावजूद ख़ुदा तआला ने शत्रुओं के षड्यंत्रों से मेरी रक्षा की।

64. चौंसठवां निशान - बराहीन अहमदिया में यह भविष्यवाणी है कि मुझ पर जितने मुकद्दमे किए जाएंगे मेरी विजय होगी। अतः प्रत्येक मुक़द्दमे में मुझे विजय प्राप्त होती रही।

65. पैंसठवां निशान - बराहीन अहमदिया में यह भविष्यवाणी है कि मेरे पास इतने लोग आएंगे कि निकट होगा कि मैं उनकी मुलाकातों की अधिकता से थक जाऊं। अतः कई लाख लोग मेरे पाए आए।

66. छियासठवां निशान - बराहीन अहमदिया में अस्हाब-ए-सुफ़्फ़ा के बारे में भविष्यवाणी है। अतः कई निष्कपट लोग अपने स्थानों से प्रवास करके मेरे मकान के कुछ भागों में सपरिवार निवास रखते हैं, जिनमें सर्वप्रथम मौलवी हकीम नूर दीन साहिब हैं।

67. सरसठवां निशान - बराहीन अहमदिया में यह भविष्यवाणी है कि तुझे अरबी भाषा में सरस सुबोध भाषा शैली प्रदान की जाएगी[1] जिसका कोई मुकाबला नहीं कर सकेगा। अतः अब तक कोई मुकाबला न कर सका।

76. छिहत्तरवां निशान - बराहीन अहमदिया में मेरे बारे में ख़ुदा तआला की यह भविष्यवाणी है القيت عليك محبّةً منّى ولتصنع علٰى عينى अर्थात् ख़ुदा तआला का कथन है कि मैं लोगों के हृदय में तेरा प्रेम डालूंगा और मैं अपनी आंखों के सामने तेरा पोषण करूंगा। यह उस समय का इल्हाम है कि जब एक व्यक्ति भी मेरे साथ संबंध नहीं रखता था। फिर एक समय के पश्चात् यह इल्हाम पूरा हुआ और ख़ुदा ने हज़ारों लोग ऐसे पैदा किए कि जिन के हृदयों में उसने मेरा प्रेम भर दिया। कुछ ने मेरे लिए प्राणों को बलिदान कर दिया तथा कुछ ने मेरे लिए अपना आर्थिक विनाश स्वीकार कर लिया तथा कुछ मेरे लिए अपने घरों से निकाले गए तथा कष्ट दिए गए और सताए गए तथा हज़ारों ऐसे लोग हैं कि वे अपनी व्यक्तिगत

हाशिया- इस बारे में ख़ुदा तआला की ओर से यह इल्हाम हुआ था - كلام افصحت من لدن رب كريم - और जो मैंने अब तक अरबी भाषा में किताबें लिखी हैं जिनमें से कुछ गद्य में हैं और कुछ पद्य में जिसका सदृश विरोधी उलेमा प्रस्तुत नहीं कर सके। उनका विवरण यह है :- 1.पुस्तक अंजाम-ए-आथम से संलग्न पृष्ठ-73 से 282 तक, 2.अत्तब्लीग़ आईना कमालाते इस्लाम से संलग्न, 3.करामा-तुस्सादिक़ीन 4.हमामतुल बुशरा, 5.सीरतुल अब्दाल, 6.नूरुलहक़ भाग प्रथम, 7.नूरुलहक़ भाग द्वितीय, 8.तुहफ़ा बग़दाद, 9.एजाज़ुल मसीह, 10.इत्मामुल हुज्जह, 11.हुज्जतुल्लाह, 12.सिर्रुलख़िलाफ़ह, 13.मवाहिबुर्रहमान, 14.एजाज़-ए-अहमदी, 15.ख़ुत्बा इल्हामिया, 16.अलहुदा, 17.अलामातुल मुकर्रबीन संलग्न तज़किरतुश्शहादतैन तथा वे पुस्तकें जो अरबी में लिखी जा चुकी हैं, परन्तु अभी प्रकाशित नहीं हुईं ये हैं :- 18.तर्ग़ीबुलमोमिनीन, 19.लुज्जतुन्नूर, 20.नज्मुल हुदा। इसी से।

आवश्यकताओं पर मुझे प्राथमिकता देकर अपने प्रिय धन मेरे सम्मुख रखते हैं तथा मैं देखता हूं कि उनके हृदय प्रेम से परिपूर्ण हैं तथा बहुत से ऐसे लोग हैं कि यदि मैं कहूं कि वे अपने धन से पूर्णतया पृथक हो जाएं या अपने प्राणों को मेरे लिए अर्पण कर दें तो वे तैयार हैं। जब मैं इस स्तर की श्रद्धा एवं निष्ठा अपनी जमाअत के अधिकतर लोगों में देखता हूं तो सहसा मुझे कहना पड़ता है कि हे मेरे सामर्थ्यवान ख़ुदा ! वास्तव में कण-कण पर तेरा अधिकार है, तूने इन हृदयों को ऐसे उपद्रवों से भरपूर युग में मेरी ओर आकृष्ट किया और उन्हें दृढ़ता प्रदान की। यह तेरी शक्ति का महानतम चमत्कार है।

77. सतत्तरवां निशान- मेरा लड़का बशीर अहमद आंखों के रोग से ऐसा रोग ग्रस्त हुआ कि कोई औषधि लाभप्रद नहीं हो सकती थी तथा दृष्टि जाने का भय था। जब रोग भयंकर अवस्था को पहुंच गया तब मैंने दुआ की तो इल्हाम हुआ **بَرّق طفلی بشیر** अर्थात् मेरा पुत्र बशीर देखने लगा। अत: उसी दिन या दूसरे दिन वह स्वस्थ हो गया। यह घटना भी लगभग सौ लोगों को मालूम होगी।

84. चौरासीवां निशान- 5 अगस्त 1906 ई. को एक बार मेरे शरीर का नीचे का आधा भाग सुन्न हो गया और एक पग भी चलने की शक्ति न रही और चूंकि मैंने यूनानी चिकित्सा-पद्धति की पुस्तकों का एक-एक पाठ पढ़ा था इसलिए मुझे विचार आया कि ये पक्षाघात के लक्षण हैं, इसके साथ ही बहुत दर्द था, हृदय में घबराहट थी कि करवट बदलना कठिन था। रात्रि के समय जब मैं बहुत कष्ट में था तो मुझे शत्रुओं की गालियों का विचार आया परन्तु केवल धर्म के लिए न किसी अन्य कार्य के लिए। अत: मैंने ख़ुदा के दरबार में दुआ की कि मृत्यु तो एक अनिवार्य बात है परन्तु तू जानता है कि ऐसी मृत्यु और कुसमय मृत्यु में शत्रुओं की गालियां हैं। तब मुझे थोड़ी सी ऊंघ के साथ यह इल्हाम हुआ -

اِنَّ اللہ علٰی کلّ شیئٍ قدیر۔ اِنّ اللہ لا یخزی المؤمنین۔

अर्थात् ख़ुदा सर्वशक्तिमान है और ख़ुदा मोमिनों को अपमानित नहीं किया करता। अत: उसी दयालु ख़ुदा की मुझे सौगंध है जिसके हाथ में मेरे प्राण हैं, जो इस समय भी देख रहा है कि मैं उस पर झूठ गढ़ता हूं या सच बोलता हूं कि इस इल्हाम के साथ ही सम्भवत: आधे घंटे तक नींद आ गई। फिर सहसा जब आंख खुली तो मैंने देखा कि रोग का कोई नामोनिशान नहीं रहा। समस्त लोग सोए हुए थे और मैं उठा और आज़माने के लिए चलना आरंभ किया तो सिद्ध हुआ कि मैं बिल्कुल स्वस्थ हूं। तब मुझे अपने सामर्थ्यवान ख़ुदा की महान शक्ति को देखकर रोना आया कि हमारा ख़ुदा कैसा सामर्थ्यवान है और हम कैसे सौभाग्यशाली हैं कि उसकी वाणी अर्थात् पवित्र क़ुर्आन पर ईमान लाए और उसके रसूल का अनुसरण किया और कितने दुर्भाग्यशाली वे लोग हैं जो इस चमत्कारों से परिपूर्ण ख़ुदा पर ईमान नहीं लाए।..

85. पचासीवां निशान- एक बार मैं आंतों की पेचिश से बहुत बीमार हुआ और सोलह दिन गुदा के मार्ग से रक्त आता रहा तथा बहुत दर्द था जो वर्णन से बाहर है। उन्हीं दिनों में स्वर्गीय शैख़ रहीम बख़्श साहिब मौलवी अबू सईद मुहम्मद हुसैन साहिब के पिता श्री बटाला से मेरे रोग का हाल पूछने आए तथा उन्होंने मेरी

गंभीर स्थिति को देखा और मैंने सुना कि वह कुछ लोगों को कह रहे थे कि आजकल यह रोग संक्रामक रोग की भांति फैल रहा है। बटाला में मैं अभी एक जनाज़ा पढ़कर आया हूं जो इसी रोग से निधन हुआ है तथा ऐसा संयोग हुआ कि मुहम्मद बख़्श नामक एक नाई क़ादियान का रहने वाला उसी दिन उसी रोग से रोगग्रस्त हुआ और आठवें दिन चल बसा। जब सोलह दिन मेरे रोग पर गुज़रे तो निराशा के लक्षण प्रकट हो गए तथा मैंने देखा कि मेरे कुछ परिजन दीवार के पीछे रोते थे और मसनून तौर पर तीन बार सूरह यासीन (یٰسٓ) सुनाई गई। जब मेरा रोग इस सीमा तक पहुंच गया तो ख़ुदा तआला ने मेरे हृदय पर इल्क़ा किया कि और उपचार त्याग दो और नदी की रेत जिसके साथ पानी भी हो तस्बीह (सुब्हान अल्लाह) और दरूद के साथ अपने शरीर पर मलो। अत: शीघ्र ही नदी से ऐसी रेत मंगवाई गई और मैंने इस वाक्य के साथ कि "सुब्हान अल्लाह व बिहम्दिही सुब्हान अल्लाहिल अज़ीम" तथा दरूद शरीफ़ के साथ उस रेत को शरीर पर मलना आरंभ किया। प्रत्येक बार शरीर पर वह रेत पहुंचती थी तो जैसे मेरा शरीर अग्नि में से मुक्ति पाता था। प्रात: काल तक वह रोग दूर हो गया तथा प्रात: काल ही इल्हाम हुआ -

وان کنتم فی ریبٍ مّما نزّلنا علیٰ عبدنا فأتوا بشفاءٍ من مثلہ۔

86. छियासीवां निशान- एक बार मुझे दांत में बहुत पीड़ा हुई। बिल्कुल चैन न था। किसी व्यक्ति से मैंने पूछा कि इसका कोई उपचार है? उसने कहा -علاج دندان اخراج دندان (कि दांत का उपचार दांत निकालना है) दांत निकालने से मेरा हृदय भयभीत हुआ। उस समय मुझे ऊंघ आ गई और मैं पृथ्वी पर व्याकुलता की स्थिति में बैठा हुआ था और चारपाई की पायंती पर अपना सर रख दिया और थोड़ी सी नींद आ गई। जब मैं जागा तो दर्द का नामोनिशान न था तथा मुँह पर यह इल्हाम जारी था :-

اذا مرضت فھو یشفی अर्थात् जब तू रोगग्रस्त होता है तो वह तुझे रोगमुक्त करता है। इस पर ख़ुदा का आभार। (हक़ीक़तुल वह्यी, रूहानी खज़ाइन जिल्द- 22)

☆ ☆ ☆

Sayed K. A. Rihan, M.B.A.
Proprietor
Tel: 9035494123/9740190123

B.M.S.ENTERPRISES
INDUSTRIAL UTILITY SOLUTIONS

21, Erannappa Layout Ambadkar Main Road,
Mahadevapura, Bangalore - 560 048
E-mail: bmsentrprises@gmail.com

अहमदिया समुदाय के संस्थापक लिखते हैं-

''हे समस्त वे लोगो जो पृथ्वी पर रहते हो! और हे समस्त वे मानवीय आत्माओ!! जो पूर्व और पश्चिम में आबाद हो, मैं पूरे ज़ोर के साथ आपको इस तरफ आमन्त्रित करता हूँ कि अब पृथ्वी पर सच्चा धर्म केवल इस्लाम है और सच्चा ख़ुदा भी वही ख़ुदा है जो पवित्र क़ुर्आन ने बताया है और सदा के आध्यात्मिक जीवन वाला ''नबी'' प्रताप और पवित्रता के सिंहासन पर बैठने वाला हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम है।''

(रूहानी ख़ज़ायन भाग-15, तिरयाक़ुल क़ुलूब, पृष्ठ-141)

सामान्य ज्ञान (नाटो' क्यों और कब बना था?)

नाटो (NATO) का पूरा नाम है, North Atlantic Treaty Organization (उत्तर अटलांटिक संधि संगठन) है. नाटो की स्थापना 4 अप्रैल 1949 हुई थी. यह एक अंतर-सरकारी सैन्य गठबंधन है, इसे उत्तर अटलांटिक एलायंस भी कहा जाता है. वर्तमान में इसके 30 सदस्य देश हैं. नाटो से सबसे बाद में जुड़ने वाले देश हैं; अल्बानिया और क्रोएशिया हैं. इन दोनों ने वर्ष 2009 में नाटो की सदस्यता ग्रहण की थी. नाटो का मुख्यालय ब्रसेल्स, बेल्जियम में है.

नाटो की स्थापना क्यों हुई थी?

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद पूर्व के सोवियत संघ ने पूर्वी यूरोप से अपनी सेनाएँ हटाने से इंकार कर दिया और अंतर्राष्ट्रीय संधियों का उल्लंघन कर 1948 में बर्लिन की नाकेबंदी कर दी. सोवियत संघ के इस कदम से अमेरिका सहित यूरोप के देशों को लगा कि सोवियत संघ वहाँ साम्यवादी शासन की स्थापना करना चाहता है. इसलिए अमेरिका ने एक ऐसा संगठन बनाने की पहल की जो कि सोवियत संघ के अतिक्रमण से पश्चिमी देशों की रक्षा कर सके.

अत: अमेरिका ने 4 अप्रैल, 1949 को वांशिगटन में नाटो की स्थापना की, जिस पर 12 देशों ने हस्ताक्षर किए थे. ये देश थे- संयुक्त राज्य अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस, कनाडा, इटली, नीदरलैंड, आइसलैण्ड, बेल्जियम, लक्जमर्ग, नार्वे, पुर्तगाल और डेनमार्क.

'नाटो के उद्देश्य'

1. नाटो का उद्देश्य इसके सदस्य राष्ट्रों की राजनीतिक स्वतंत्रता और सैन्य सुरक्षा को बनाये रखना है
2. सोवियत संघ के पश्चिमी यूरोप में विस्तार को रोकना
3. पश्चिम यूरोप के देशों को एक सूत्र में संगठित करना
4. कुल मिलाकर इस संघठन का मुख्य उद्येश्य सोवियत संघ के खिलाफ पूरे विश्व समुदाय को एकजुट करना और अमेरिका के प्रभाव को बढ़ाना था.

नाटो की संरचना

*उत्तर अटलांटिक परिषद की बैठकों की अध्यक्षता महासचिव करता है और जब निर्णय लेना होता है, तो सर्वसम्मति और सामान्य समझौते के आधार पर कार्रवाई पर सहमति होती है. यहाँ पर बहुमत या मतदान के माध्यम से कोई निर्णय नहीं लिया जाता है. नाटो सामूहिक रक्षा के सिद्धांत पर काम करता है, जिसका तात्पर्य 'एक या अधिक सदस्यों पर आक्रमण सभी सदस्य देशों पर आक्रमण माना जाता है।

*नाटो में कोई भी निर्णय सभी 30 सदस्यों के सामूहिक इच्छा के आधार पर ली जाती है।

*नाटो के सदस्य देशों का कुल सैन्य खर्च विश्व के सैन्य खर्च का 70% से अधिक है, जिसमें अमेरिका अकेले अन्य यूरोपीय देशों की तुलना में अधिक खर्च करता है।

***भारत नाटो का सदस्य देश नहीं है।**

☆ ☆ ☆

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ
بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا ○
(سورہ بنی اسرائیل، آیت 31)
LUCKY BATTERY CENTRE
BATTERY & DIGITAL INVERTER
Thana Chhak, NH-5 Soro
Balasore, Odisha
Pin 756045
e-mail : abdul.zahoor786@gmail.com
Mob. : 09438352786, 06788221786

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ
بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا ○
(سورہ بنی اسرائیل، آیت 31)
Prop.
Sk. Riyazuddin
Moblie: 9437188786
9556122405
KING TENT HOUSE
At. Ashram Chak, P.O. Soro, Distt. Balasore, ODISHA

يُنْبِتُ لَكُمْ بِهِ الزَّرْعَ وَالزَّيْتُونَ وَالنَّخِيلَ وَالْأَعْنَابَ وَمِنْ كُلِّ
الثَّمَرَاتِ ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ○
(النحل ۱۱)
Prop : Sk. Ishaque
FFT
Fruits
Phangudubabu : 7873776617
Papu : 9337336406
Lipu : 9778116653
FAIZAN FRUITS TRADERS
Near Railway Gate, Soro, Balasore, Odisha - 756045
PAPU LIPU ROAD WAYS
All India Truck Supplier
Papu : 9337336406, Lipu : 9437193658, 9778116653,

Sayed Wasim Ahmad
Mobile
09937238938
محبت سب کے لئے نفرت کسی سے نہیں
PRAN
MANGO JUICEPAK
Marie
RUKSAR AGENCY
Pran Juice, Gandour Food Products,
Monginis Cake, Raja Biscuit etc.
Mubarakpur, At. Soro,
Distt. Balasore (Odisha)

R
REHAN'S
REHAN INTERNATIONAL
WE ARE ON
snapdeal
flipkart
amazon.com
paytm
Ph: 7702857646
rehaninternational@gmail.com
We accept All Debit & Credit Cards

Urfan Ahmed Saigal
9550147334
deco.leathers@gmail.com
DECO
DL
LEATHERS
Genuine Quality
We Undertake Complimentary Orders Also
Manufacture
Address: 1/1/129, Alladin Complex 72, SD Road
Clock Tower, Beside Kamat Hotel, Secunderabad-3

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

SAKTI BALM

INDICATION: SHAKTI BALM GIVES RELIEF FROM STRAINS CUT, LUMBAGO COUGHS, COLD, HEADACHE AND OTHER ACHESAND PAINS FOMENTATION OF THE AFFECTED PART HELPS TO RELIFE PAIN QUICKLY.

AYURVEDIC PAIN BALM
Prop: SK.HATEM ALI

ALL INDIA AVAILABLE

SOUTH 24 PARGANA, DIAMOND HARBOUR, WEST BENGAL

INDIA MOVES ON EXIDE

M.S.AUTO SERVICE
2-423/4 Bharath Building
Railway Station Road Kacheguda,
Hyderabad.500027(T.s)

Cell :9440996396,9866531100

METRO PLASTIC PRODUCTS

YUBA

QUALITY FOOTWEAR

E-mail:yuba.metro@yahoo.com

{AN ISO 9001:2008 CERTIFIED COMPANY}

H.O & FACTORY :20 A RADHANATH CHOUDHURAY ROAD
KOLKATA700015,PH :2328-1016

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

RSB Traders & whole seller

Specialist in Teddy Bear Ladies & Kids items, All Types of Bags & Garments items

Branch: Aroti Tola Po muluk
Bolpur-Birbhum
Head office: Q84 Akra Road
Po.Bartala, Kolkata-18

Mob: 9647960851
9082768330

Fawad Anas Ahmed

GOLDEN GROUP REAL ESTATE

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

दुआओं का आवेदक

DISTT. YADGIR - 585 201
KARNATAKA
Ph. : 9480172891

☎ : 06784-230727
Mob. : 9437060325
Is Allah not sufficient for His servant
JANATA
STONECRUSHINGINDUSTRIES
Mfg. :
Hard Granite Stone, Chips, Boulder etc.
LOVE FOR ALL
HATRED FOR NONE
At - Tisalpur, P.O. - Rahanja,
Distt. - Bhadrak - 756 111

Mob. 9934765081
Guddu
Book Store
All type of books N.C.E.R.T, C.B.S.E & C.C.E are available here. Also available books for childrens & supply retail and wholesale for schools
Urdu Chowk, Tarapur, Munger,
Bihar 813221

NASIR MAHMOOD
Ph. : 9330538771
7686979536
MANUFACTURER
and
WHOLE SELLER
Leather Wallats, Jackets, Ladies Bag,
Port Folio Bag, Key Chain, Belts etc.

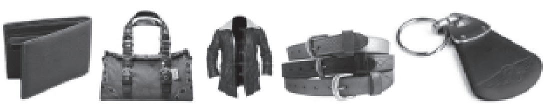

70D Tiljala Road, Kolkata - 700046
e-mail : nasirmahmood.125@gmail.com

LOVE FOR ALL
HATRED FOR NONE
Cell
9423805546 / 9960071753
9420399786 / 2363271443
Prop.
Hameed Khan Beejali

Creative Computers
Durwankur, Appt. 05, Old, Shiroda Naka,
Tal. Sawantwadi, Distt. Sindhudurg, Maharashtra - 416510

Ziyafat Khan
Mobile
09937845993
Love For All Hatred For None

दुआओं का आवेदक
WASIMA STONE CRUSHER
Pankal, Near Nuapatna Town,
Distt. Cuttack (Odisha)

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا
[illegible]
Mob. : 09986670102
09036915406
Prop.
Fazal-e-Haq
Eajaz-ul-Haq
Anwar-ul-Haq
Rizwan-ulHaq

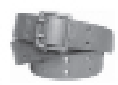

Al-Fazal Garments
Specialist in : School Uniform, Tai, Belt,
Jeans, T-Shirts, Shirts etc.
Opp. Krishna Gramina Bank, Beside Sana Medical,
Main Road, Yadgir, Karnataka

पत्रिका के बारे में अपनी राय (Feedback) अवश्य दें

प्रिय पाठको! धार्मिक भेद-भाव तथा धर्मों के बीच पनप रही नफरत के वर्तमान परिदृश्य में पत्रिका "**राहे ईमान**" के द्वारा हम निरंतर इस्लाम की वास्तविक तथा मौलिक शिक्षाओं से आपको अवगत कराने का प्रयास कर रहे हैं। इस पत्रिका को पढ़कर आपको कैसा लगा, हमारे संपादकीय मंडल की ओर से जो लेख इस पत्रिका में प्रकाशित किए जाते हैं उनके प्रति आपकी क्या राय है? यह हमें अवश्य बताएं। आपका **फ़ीडबैक (प्रतिक्रिया)** इस पत्रिका को लाभदायक तथा ज्ञानवर्धक बनाने में हमारी सहायता करेगा।

यदि आपके पास कोई ऐसा सुझाव हो जो इस पत्रिका को और भी बेहतर बना सकता है तो खुद्दामुल अहमदिया भारत (जमाअत के अंतर्गत नौजवानों की संस्था) आपके सुझाव का स्वागत करती है। हमारा इस पत्रिका को बेहतर से बेहतर तथा ज्ञान वर्धक एवं ईमान वर्धक बनाने का प्रयास निरन्तर जारी है। इसके अतिरिक्त भी यदि पत्रिका से संबंधित और भी कोई सुझाव या परामर्श आप हमें देना चाहते हैं तो उसका हृदय से स्वागत है।

आप अपना फ़ीडबैक हमें मज्लिस खुद्दामुल अहमदिया भारत की ईमेल आईडी पर भिजवा सकते हैं और एडिटर या मैनेजर को फोन भी कर सकते हैं :-

Email id- khuddam@qadian.in

Manager- 98156-39670, Editor- 91150-40806

पृष 7 का शेष **षष्टम** : यह कि रूढ़ियों और लोभ लालसा के अनुसरण से रुक जाएगा और क़ुर्आन शरीफ की आदेशों को पूर्ण रूप से अपने ऊपर लागू करेगा और अल्लाह तथा उसके रसूल के आदेशों को अपनहरकाम में मार्गदर्शक बनाएगा।

सप्तम : यह कि अहंकार और अभिमान को सर्वथा त्याग देगा और शालीनता और सदाचार और दीनता और निरीहता और नम्रतापूर्वक जीवन व्यतीत करेगा।

अष्टम : यह कि धर्म और धर्म की प्रतिष्ठा और इस्लाम के प्रति सहानुभूति को अपने प्राण और अपने धन और अपनी मान-मर्यादा और अपनी सन्तान और अपने प्रत्येक सगे सम्बन्धी से प्रियतम समझेगा।

नवम : यह कि केवल अल्लाह तआला के लिए समस्त मानवजाति से सहानुभूति का व्यवहार करेगा और यथासम्भव अपनी ईश्वर प्रदत्त शक्तियों और संसाधनों से मानव समाज को लाभ पहुँचाएगा।

दशम : यह कि केवल ख़ुदा तआला के लिए इस विनीत से भ्रातृ-सम्बन्ध, पुण्यादेशों का पालन करने का इक़रार करते हुए स्थापित करके उस पर आजीवन क़ायम रहेगा। और इस भ्रातृ-सम्बन्ध में ऐसा उच्च कोटि का होगा कि उसका उदाहरण सांसारिक रिश्तों और सम्बन्धों और समस्त सेवकजन्य अवस्थाओं में पाया न जाता हो। (इश्तिहार तक्मील-ए-तब्लीग़ 12 जनवरी सन् 1889 ई.)

आज भी जो बैअत करता है वह इन उपरोक्त दस शर्तों के पालन करने का वचन करता है।